RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 5 अंक 6 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका अक्टूबर 2022

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन : अक्टूबर माह

दीपोत्सव के पावन पर्व की सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

लक्ष्मणसिंह राठौड़
सीनियर जर्नलिस्ट
जयवर्द्धन न्यूज
राजसमंद

तमसो मा ज्योतिर्गमय

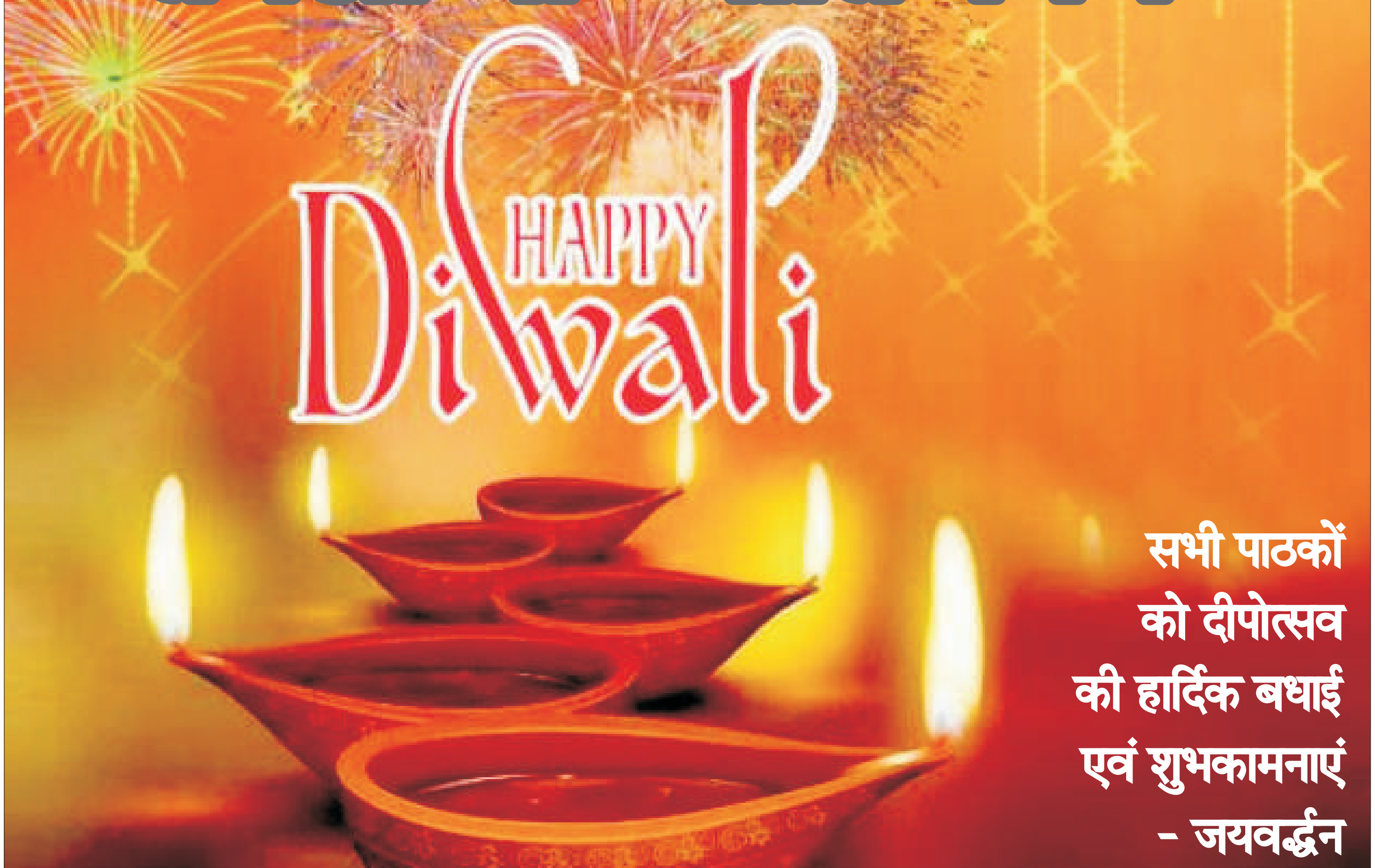

सभी पाठकों को दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

- जयवर्द्धन

आओ... हम सब मिलकर... पन्नाधाय, महाराणा प्रताप निर्मल मेवाड़ बनाएं

पर्यावरण | संस्कृति | संस्कार | शिक्षा | रोजगार

आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट

JAI ASHAPURA HYDRAULIC LIFTS

वापी (गुजरात)/राजसमन्द (राजस्थान)

जन्मस्थली : लक्खाजी की भागल, गांव-मादरेचों का गुड़ा, कालिंजर, पं.सं. कुंभलगढ़, जिला-राजसमंद

कर्मस्थली : शॉप नं. 4, त्रिवेणी अपार्टमेंट, जय श्री टॉकीज के पीछे चला रोड़, वापी, जिला-वलसाड़ (गुजरात)

सम्पर्क : 02602465890, 09924100227, 7727045121, 9824186890

www.ashapuramanavkalyantrust.com, Email : ashapuramanavkalyanseva@gmail.com

नानजी भाई गुर्जर -अध्यक्ष एवं संस्थापक

सबका साथ, गांव का विकास | हमारा पर्यावरण, हमारी जिम्मेदारी | एक पेड़, एक जिन्दगी। पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ।

Expert Quality
Roop Rajat
Purity for yours
Healthy Life...
Dallya
POHA
MAIDA
Besan
SOOJI
Expert Quality
Roop Rajat
QUALITY ASSURED
100%
ISO 9001:2015 CERTIFIED
Contact For Distributors : 9602230531/9414173532

दीपोत्सव के
पावन पर्व पर
समस्त व्यापारीगणों के साथ आमजन
को हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं
कमल खंडेलवाल
अध्यक्ष
जिला खाद्यान्न व्यापार संघ
राजसमंद
मो. 96022-30531
Ashoka Food Industries
Address :NH 8 Miyari Village Kelwa 9602230531, 9414173532

HAPPY
Diwali
NATHDWARA
GROUP OF INSTITUTIONS
Estd.2010
13 Years Old Campus in Southern Rajasthan
NATHDWARA GROUP OF INSTITUTIONS
Upali Oden, Nathdwara, Dist.- Rajsamand(Raj.)
B.Sc. (PCM, BCZ, PCC)
BCA
M.Sc.
B.A. B.Ed. (4 Years Integrated)
LL.B.
B.Sc. B.Ed. (4 Years Integrated)
ITI
DIPLOMA
B.Tech
CONTACT :
+91-9636815142, 9414174064
www.ngi.edu.in
NGInathdwara
nginathdwara
NGI Nathdwara

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर
ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा,
लक्ष्मणसिंह राठौड़
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता
शक्ति स्पोर्ट्स, के पास शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 96729-80901, 94142-39648

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

इनविजीवल मेन

किसी स्कूल केम्पस में पहुंच ऐसी जगह बैठ जाए, जहां आपको पहचानने वाला कोई न हो। पहचान दूसरों की नज़रों में आपको उपेक्षित या महत्वपूर्ण बना देती है। तो आप इनविजीवल आदमी बन स्कूली बच्चों की किलकारियां सुनें, उन किलकारियों में भरा संगीत सुनें। वह कृतज्ञता का भाव सुनें, जो बच्चों के मन में है। काश आप न होते तो बच्चों के चेहरों पर शायद मुस्कुराहट की कोई रेखा भी नहीं होती।

सोचिए कि इस खूबसूरत कायनात में आप न होते तो क्या होता? सुबह की पहली घंटी पर स्कूल की ओर बच्चों के दौड़ पड़ने की शिद्दत न होती, स्कूल में मेरे अलावा मुझे चाहने वाला है। यह बच्चे के अन्दर का संतोषदायक एहसास न होता, असेंबली में आपकी एक आवाज़ पर पिन ड्रोप साइलेंस न होता, एक प्रोत्साहन भरी मीठी आवाज़ पर बच्चों के हाथ खड़े कर अभिव्यक्ति के अवसर देने का विनम्र निवेदन न होता, आपके पहुंचने से पहले ही बच्चे का दोस्त बस्ता खोल पढ़ने को बेताव न होता, होम वर्क की कॉपी पर वेरीगुड लिखे जाने पर संसार की अनंत खुशियां मुट्ठी में बंद होने का आभास न होता, बदलते कालांशों में फिर मिलेंगे बच्चों! सुनकर बच्चों की खुशियों का पारावार न होता, चेहरा अलग लेकिन भाव वही वाले आपकी ही दूसरी शक्ल वाले आपको पाकर बस्ते से नए विषय की बुक बाहर निकाल लेने की फुर्ती का व्यवहार न होता, सांझ होते होते फिल्म के बदलते दृश्यों और बदलते अक्सों को पाकर कभी खुशी कभी गम का भाव व्यापार न होता, कभी थोड़ी डांट कभी ढेरों प्यार लुटाने के आपके बदलते सुरों को देख बच्चों को तुम जो मिल गए हो तो ये लगता है कि जहां मिल गया है, का विश्वास न होता, खेल के मैदान पर दौड़ते भागते बच्चों के साथ आपको खेलते कूदते देखकर उन्हें 'कोई अपना है उनका' का आश्वास न होता और छुट्टी की घंटी बजते ही बिछुड़ने का रंज और फिर सुबह होगी का इंतजार न होता।

आप बिना दिखाई दिये हुए भी अपने विद्यार्थी समाज के लिये कितना जरूरी, कितना करीब और कितना प्रासंगिक हूं। यह समझ में आता है, लेकिन वे नहीं समझते जो आपको अपने लिए केवल उपयोग की वस्तु मान बैठे हैं। आप स्कूल में हों, कालेज में हों, विश्वविद्यालय में हों, आपका हुनर, आपकी योग्यता, क्षमता को अपने मिस उपयोग करने वाले अभिभावकों, शासकों, प्रशासकों, नेताओं के लिये आप कोर्स पूरा कर बच्चे को पास कराने की मशीन मात्र हैं। अपनी किताबी और खिताबी योजनाओं को पूरा कराने वाले फ़कत माध्यम हैं। प्रशासकीय कामों को अंजाम पर ले जाने वाली मशीनरी हैं और अपना मोहरा बनाकर अपने हितों में आपको मदारी और बंदर वाले खेल का पात्र बना लेने वाले बस एक तरीके हैं।

आपकी मूल सेवाओं को प्रशंसनीय, अनुकरणीय, काल निरपेक्ष समझने वालों की निरंतर आ रही गिरावट ने अधिकतर शिक्षा सेवियों को विचलित, क्रोधित और विद्रोही बना दिया है, मुझे ऐसा लगने लगा है। एक शिक्षासेवी के रूप में मुझे लगता है, जैसे मेरी शक्तियां खत्म हो रही हैं और मेरा आत्म क्लेश मुझमें वितृष्णा पैदा कर रहा है। वे कौनसे कारण हैं जो शिक्षकीय गुरुत्व को शनै: शनै: हवा में पीले पड़े पत्तों की तरह उड़ा रहा है? लगता है, इन सब स्थितियों को खंगालने के लिए आज आत्म विश्लेषण का समय है। क्या आपको नहीं लगता, शिक्षक और छात्र दोनों का ही सुविधाभोगी होते जाना मूल कारण है? क्या यह भी नहीं कि वे जिन्होंने अपनी वाहवाही के लिये शिक्षा जैसे अति संवेदनशील विषय में सुविधाओं के नाम पर एक प्रकार की 'नो वर्क कल्चर' के समय की शुरुआत करने के बीज वपन कर दिये हैं? अभिभावकों की शह पर बच्चों का शिक्षकों से दूर होते जाना अवज्ञा का कारण बन गया। वेतनभोगी होना अपराध नहीं, आजीविकोपार्जन के लिये शिक्षा को माध्यम बनाना भी स्वीकार, लेकिन उसके प्रतिदान स्वरूप निष्ठाओं को नए रूप में परिभाषित करते हुए आजीविका को ही प्राथमिकता देने लग जाना संभवत: एक महत्वपूर्ण कारण है।

शिक्षक कर्म को एक नए तराजू पर तोलने की प्रवृत्ति ने शिक्षक, शिक्षार्थी और अभिभावक के मध्य दूरियां बढ़ा दी हैं। अपने आपमें कमजोर पड़े तो शिक्षणेतर समाज ने हम पर अविश्वास करना शुरू कर दिया है। शिक्षा को स्वहित में प्रयोग किये जाने के शासक, प्रशासक, सरकार, राजनीति न जाने किस किसने शिक्षा की मूल संवेदना को ही खत्म कर दिया है, जबकि शिक्षा और शिक्षक कहां नहीं है। समाज की बहुआयामी रचना के क्षेत्र में वह हर जगह है इनविजीबल बनकर। लेकिन आज भी शिक्षा के मंदिरों में जहां जहां बच्चों के चेहरे पर उल्लास, हंसी और ऊर्जा की इबारत लिखी हुई मिले, समझिए, वहां शिक्षक आज भी अपनी भव्य परंपराओं को लेकर जीवित है। यदि यह खुशनुमा वातावरण यों ही बना रहे, तो विश्वास मानिए, शिक्षक रहे न रहे, उसके द्वारा विकसित फुलवारियों की सुगंध में जमाना उसे ढूंढेगा। आइए, एक नई कोशिश के संकल्प के साथ बढ़ें और खोजें उन शिक्षकों को अपने अतीत में जो आज नहीं हैं, लेकिन उनकी विकसित पौध हम हैं, यह सोच हम गौरवान्वित हैं।

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
कांकरोली, राजसमंद

दीपावली महोत्सव की भाव भावना

दीपावली महोत्सव पर सुधी पाठकों और प्रभु सेवानुरागियों के अभिज्ञानार्थ पुष्टि संप्रदाय की पंचम पीठ के आचार्य श्री द्वारकेश जी कृत ग्रंथ भाव भावना का उल्लेख करना सामयिक होगा, जिसे वल्लभकुलीन मंदिरों के सेवानुरागी भक्तों व मंदिर संबद्ध सेवकों के लिये मार्गदर्शिका कहा जा सकता है। यह मार्गदर्शिका सेवानुरागियों व बाहर से आने वाले भक्त पर्यटकों की जानकारी के लिये एक सरल व सुबोध साहित्य का कार्य करेगी।

पुष्टि संप्रदाय की सेवा प्रणालिका में इस प्रकार की निर्देशिकाएं उपलब्ध हैं, जो मंदिरों की सेवा परंपरा को सुनियोजित क्रम में बांध एकरूपता देती हैं। पुष्टिमार्ग की पंचम पीठ परंपरा के आचार्य श्री द्वारकेश जी के ग्रंथ भाव भावना का अवगाहन कर ऐसा ही अनुभव हुआ। भारतवर्ष के समस्त वल्लभकुलीन मंदिरों में सेवा पद्धति की समरूपता लाने के लिये श्री द्वारकेशजी के भाव भावना ग्रंथ को मंदिरों के लिये निर्देश पुस्तिका के रूप में देखा जाना चाहिये। श्री द्वारकेश जी ने सामान्य भक्तों और अपने घरों में ठाकुर सेवा करने वाले सामान्य जन के लिये इस गाइडलाइन को तैयार कर सेवा, पूजा, आराधन जैसे विषयों को भी बड़े ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समक्ष रख सेवा कार्य को वैसे ही सरल व बोध गम्य बना दिया है। जैसे किसी विद्यार्थी को उपलब्ध कराई गई। वह गाइड जो पाठ्य पुस्तक के कठिन अंशों का हल अति सरल तरीके से करा देती है। इस ग्रंथ में वे सभी बातें वर्ष पर्यंत मनाए जाने वाले त्यौहारों के संदर्भ में विवेचित हैं, जिन्हें देखने और आनन्द लेने के लिए दूर दूर से भक्त पर्यटक नाथद्वारा, कांकरोली आते हैं।

सम्पूर्ण ग्रंथ से प्रासंगिक होगा, धनतेरस, रूप चतुर्दश और अन्नकूट के अवसर पर प्रभु सेवा का वह स्वरूप जो सामान्य रूप से सभी पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में देखने को मिलता है।

कार्तिक कृष्ण 13, धन तेरस

श्री द्वारकेशजी की निर्देशिका भाव भावना में अंकित सेवाक्रम में प्रभु के श्रृंगार में हरे तास के बागा (वस्त्र) और उस पर हरे रंग का चीरा (उपरणा) और श्याम श्रृंगार किए जाने का पारंपरिक प्रावधान है। एकादशी में श्याम, द्वादशी में पीत और धनतेरस के दिन हरे तास के बागा धारण कराए जाते हैं। आज के दिन अन्य भोज्य सामग्री के विशेष रूप से पीली फेनी भोग लगाई जाती है।

कार्तिक कृष्ण 14, रूप चतुर्दश

दीपावली महोत्सव की श्रृंखला में रूप चतुर्दशी पर प्रभु को फुलेल, उबटन लगाकर स्नान व कुंकुम तिलक से सज्जित किया जाता है। यह समस्त श्रृंगार विधि अभ्यंग के नाम से जानी जाती है। इस दिवस केशर स्नान का विधान है। आज के श्रृंगार में लाल तास के बागा से प्रभु को सज्जित किया जाता है। स्वभावत: लाल रंग भक्ति, अनुराग का प्रतीक है। यों भी रूप चौदस के श्रृंगार चित्त को आकर्षित करने वाले रजोगुण की ओर इंगित करते हैं। समग्रतरूए श्रृंगार प्रभु के स्नान के समय की छवि का भाव भक्त में भरने का कार्य करते हैं।

आज प्रभु को दो बीड़े उनके समीप रखे खंड पाट पर रखे जाते हैं, तिलक किया जाता है जो विजयोत्सव की भावना की ओर संकेत है और रूप चतुर्दशी के इस सुन्दर रूप पर हल्दी और आटे से बनी चार मुठिया जो चार पुरुषार्थों के त्याग का प्रतीक हैं, वारी जाती हैं। ये सभी सज्जा श्रृंगार भक्त की वृत्ति को प्रभु उन्मुख करने की क्रियाओं का प्रतीक हैं।

प्रसंग वश यहां उल्लेखनीय है कि पुष्टिमार्गीय मंदिरों में हर सज्जा, कृत्य के साथ किसी न किसी भाव का समावेश है। जैसे केशर लगाकर स्नान करने की संक्रिया के पीछे त्रिताप निवारण की भावना है। आज के दिन मालपुआ भोग आने का नियम है। ठाकुर जी के मिष्ठान्न अरोगने पर जब अधरों पर मिठास आती है, तब ही भोग अमृतमय होता है।

कार्तिक कृष्ण 15, दीपावली

दीपावली महोत्सव पुष्टिमार्ग के उत्सवों की श्रृंखला में महत्वपूर्ण प्रसंग है। आज प्रभु रुपहले ताश का बागा धारण करेंगे और श्वेत कुलही (पाग)। तुर्रा की किनारी लाल और सूथन भी लाल। लाल रंग का पटुका (उपरणा) जो प्रभु के प्रति अनुराग का प्रतीक होता है। निकट ही चौपड़ के सिंहासन पर दीपक सज्जित होता है। यह चौपड़ रखी गई सोलह गोटियों द्वारा षोडश प्रकार के भक्तों की ओर प्रतीकात्मक संकेत हैं। ठाकुरजी की शैया के बीच बीड़ा का थाल और अंगराग की कटोरी। इसी कटोरी में चौवा, चंदन और नजदीक बरास व फूलों की माला रखी जाती है। आज हमारे प्रभु भारी श्रृंगार में होते हैं। हार, माला, गुंजा, चंद्रिका, क्षुद्र घंटिका, बाजूबंद और पान। साथ ही भावना यह भी होती है कि ठाकुरजी अपने दक्षिण भाग में तूर्यप्रिया (यमुना) को बिराजित किये हुए हैं।

कार्तिक शुक्ल 1, अन्नकूट

आज मंगला आरती में रात्रि का बागा होता है जो प्रभु को सर्वांग ढंके हुए होता है। केवल श्रीमुख के दर्शन होते हैं। बागा सर्वांग आच्छादित है, जो प्रभु की गोपनीय लीला की ओर संकेत है। इसलिए श्रृंगार भी बागा पर ही किये होते हैं। कुलही श्वेत, तुर्रा लाल, रूपहरी आभा सहित ठाकुरजी के श्रृंगार में अनुराग का रंग अनुस्यूत होता है। आज मुख्यत: अनसखड़ी (पक्का भोजन) भोग प्रभु के आगे होता है। उससे भी आगे माखन मिश्री और सबसे पीछे सखड़ी (कच्चा भोजन) भोग होता है।

रोचक भावना यह है कि आज भगवान् के निकट प्रौढ़ भाव के भक्त हैं, जो अग्रगण्य हैं। अनसखड़ी उन्हीं का प्रतीक है। इसी कारण वह आगे रखी गई है। सखड़ी कोमल भाव के सलज्ज भक्तों का प्रतीक है। इसलिए वह दूरस्थ है। समग्रत: भक्तों को अन्नकूट के दर्शन इसी भावना के साथ करने चाहिए।

कार्तिक शुक्ल 2, भाईदूज

दीपावली व अन्नकूट पर्यंत प्रभु को हुए श्रम को देखकर आज श्रृंगार के बाद भोग में खिचड़ी अरोगाने का विधान है। खिचड़ी के साथ घी, संधाना, दही, पापड़, कचरिया और राजभोग में दही भात व अन्नकूट की शेष रही सामग्री में से कुछ सामग्री लेकर आज प्रभु का श्रम परिहार किया जाता है। श्री द्वारकेश जी ने इसी प्रकार वर्षपर्यंत के पर्व, उत्सवों के सेवा विधान को सामान्यीकृत किया है। अवश्य ही देशकाल परिस्थिति ने पुष्टिपीठों के सेवानुक्रम में अपनी अपनी विशेषता से अपने विग्रहों को मौलिक सेवा देने का नया क्रम भी सृजित किया है, लेकिन पुष्टिमार्ग जैसे व्यापक सेवा प्रकल्प को सिंगल अंब्रेला सिस्टम प्रदान करने में श्री द्वारकेश जी महाराज जैसे युग पुरुष के अवदान को कम करके नहीं देखा जा सकता। इति!

प्रस्तोता :
डॉ. राकेश तैलंग
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली

HONDA
ACTIVA 125
RUNS ON RESPECT
Auth. Distributor
Lavish Honda
Nathdwara Road, Kankroli Distt. Rajsamand
Ph.: 02952-220666. M. 88248-88881

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
वार्डपंच :- जालमलाल, सीमा बाई, देवजी रेबारी, कंकु बाई,
किशनलाल, रूपसिंह, सन्तु बई, नरेश, धर्मा, झमकू बाई एवं समस्त ग्रामवासी
लीला बाई गमेती
सरपंच
भंवरलाल रेबारी
उपसरपंच
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
रघुवीरसिंह चुंडावत
ग्राम विकास अधिकारी
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। * अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत नेड़च, पंचायत समिति, देलवाड़ा, जिला-राजसमंद

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
वार्डपंच :- भंवरसिंह खरवड़, गीता पालीवाल, कुका गमेती, जीवली डांगी,
बंसीलाल तेली, उदयलाल गमेती, मंजू गायरी, पुष्पा गमेती
वगताराम गमेती
सरपंच
वगताराम गमेती
उपसरपंच
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
मंजू यादव
ग्राम विकास अधिकारी
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। * अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत कालीवास, पंचायत समिति, देलवाड़ा, जिला-राजसमंद

दीपावली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राजस मार्बल माइंस, सापोल

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
शांतिलाल कोठारी
प्रदेश कांग्रेस कमेटी सदस्य राजस्थान
अध्यक्ष : ब्लॉक कांग्रेस कमेटी राजसमंद
पूर्व प्रधान
पंचायत समिति राजसमंद

समस्त जिलेवासियों
को
दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं...
Shubh Diwali
रामनारायण पालीवाल
अध्यक्ष-पर्यावरण विकास संस्था
पर्यावरण विकास संस्था एवं सदस्यगण
गौरवसिंह राठौड़
अध्यक्ष-मार्बल माइंस ऑनर्स एसो.
मार्बल माइंस ऑनर्स एसोसिएशन एवं समस्त सदस्यगण-राजसमंद

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
वार्डपंच :- कन्हैयालाल नागदा, धापू गायरी, गंगाराम गमेती, केसर गमेती, पूर्णिमा कुंवर देवड़ा, पुष्पा कुंवर देवड़ा, मालुसिंह मेघवाल, शिवलाल गमेती, वग्तु गमेती, संजय कटारिया, हीरालाल डांगी, लीला डांगी एवं समस्त ग्रामवासी
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
देवीलाल खटीक
सरपंच
भगवतसिंह देवड़ा
उपसरपंच
रघुवीरसिंह चुंडावत
ग्राम विकास अधिकारी
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। * अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत घोड़च, पंचायत समिति, देलवाड़ा, जिला-राजसमंद

चीतई दीपावली

वैसे तो भारत में इस वर्ष दीपावली नवंबर माह के अंतिम सप्ताह में मनायी जाएगी, परंतु मीडिया वालों ने सितंबर के तीसरे हफ्ते में ही दीपोत्सव मना लिया। अब आप कहोगे कि इसमें नया क्या है? भारतीय मीडिया का तो दिन में होली, रात दिवाली मनाने का सिलसिला तो कई सालों से चला आ रहा है। जैसे बलवंत पहलवान के अंकारूढ़नाटे कोलम्बुओं को चिढ़ाने और कुछ भी कहने का हक होता है। मीडिया को जिसने भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा होगा। उसने बहुत विचार किया होगा। यह नहीं कि श्वेलेश् बैठे- बैठे से बगिरते देख नियम बना दिया। विश्व का पहला कैच छूटा और गुरुत्वाकर्षण का नियम बन गया। यदि उससे बको कैच कर पचा लिया जाता तो आज भौतिक विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों को ग्रेविटीलॉ को पचाने (स्मरण) के लिए से बन हीं खाने पड़ते। अब आप कहोगे कि यह कैसा तर्क है? इन तर्कों के बीच कोई सहसंबंध नहीं है, तो सही है ऐसे ही तर्क जब आप देते हो तब हम भी सहसंबंध स्थापित करने के संबंध में संबंध बिगड़ लेते हैं। शिक्षा, रोजगार, महंगाई, स्वास्थ्य आदि के सुधार की बात करो तो 70 साल वाला सेब थमा देते हैं। चलिए सेब को टोकरी में रखते हैं। मीडिया लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ अपनी दृढ़ता और जनता तथा सत्ता के मध्य खड़े रहने के कारण कहलाती थी। जी हां, थी है नहीं। खंभा जमीन और छत को जोड़ने का कार्य कहता है। छत खंभे पर टिकी होती है, पर खंभा जमीन पर टिका होता है। कल्पना कीजिए यदि खंभा छत की उच्चता और वैभव देखकर छत के पगों से चिपक जाए तो जमीन से दूर हो जाएगा। दूरी के कारण जमीनी हकीकत भी छत तक नहीं पहुँचेगी। ऐसा खंभा ज्यादा देर छत से चिपका नहीं रह सकता और अध:पतन निश्चित है, देर से ही सही। परन्तु जब वह गिरता तो जमीन का नुकसान करता है। पतनोन्मुखी मीडिया इस समय जनता से दूर तो है ही, साथ ही साथ जनता की हानि भी करती है। जनसरोकार के मुद्दों से आजकल मीडिया उसी तरह भागती है। जैसे रक्तांबर को देखकर सांड़ भागता है।

आइए मीडिया ई दीवाली के बारे में बात करते हैं। दीप पर्व यानी पंचदिवसीय उल्लास पर्व। दीपावली अर्थात्दीपों की अवली (श्रृंखला), जो त्रेता युग में भगवान श्रीराम सचमू पुष्पक विमान से अवध पुनरागमन पर जली थीं। तब से भारत में ही नहीं, जहां, भी भारतीय हैं। इस पर्व को धूमधाम से मनाते चले आ रहे हैं। परंतु जिस तरह भारत ने असली आजादी 2014 में पायी, उसी प्रकार मीडिया ने दीवाली 2022 में मनायी। जब आठ चीते नामीबिया के जंगलों से विमानारूढ़ होकर भारतीय भूमि पर पधारे।

दीपावली पर्व एक दिन पहले से और बाद के तीन दिन यानी कुल मिलाकर पाँच दिन का पर्व होता है। उसी प्रकार चीतों के आने से एक दिन पहले जब सिंह मुखाकृति वाले विमान का चित्र रिलीज हुआ तो मीडिया में खुशी की लहर दौड़ गयी। जन हितों के उपेक्षा करने वाली मीडिया की गिद्ध नज़रों को एक मुद्दा मिल गया। सभी चैनल जुट गए अटकलों के बाजार को गर्म करने में जो कि अभी तक ठंडा पड़ा था। एंकरों ने गाल बजाऊ प्रतियोगिता में सहभागिता के लिए फॉर्म भरने शुरू कर दिए। कुछ तो इस प्रक्रिया से भी ऊपर उठकर गाल बजा बजा कर नाचने व कूदने लगे। चित्त में चीते इस प्रकार बसाये जाने लगे कि पीतरंग के अलावा गरीबी, शिक्षा, महँगाई, बेरोजगारी की कालिमा की झलक भी न दिखे।

मार्शल मैकस्मूहन का मीडिया के बारे में जग विख्यात कथन है। मीडिया प्रकाश बल्ब की तरह अपनी उपस्थिति से ही एक वातावरण बनाती है। दिन बीता, रात बीती, इन्तजार की चादर छोटी होने लगी और दूसरी सुबह मीडिया चीतई दीवाली मनाने के लिये सभी प्रकार से तैयार हो चुकी थी। टीवी चैनल एक ही शब्द का उद्घोष कर रहे थे। चीता, चीता, चीता...।

अधिकांश टीवी चैनल इस घटना को इवेंट बनाने में कोई कसर नहीं रखने वाले थे। इतनी खुशी तो किसान गाय या भैंस खरीदने में जाहिर नहीं करता, जितना एंकरों ने चीतों की आने की खबर से

व्यक्त किया। पल पल की रनिंग कमेन्ट्री से जनता जनार्दन के कर्ण तृप्त और आँखें धन्य हो रही थीं। धीरे- धीरे वह घड़ी भी आ गयी, जिसका तामझाम एंकरों ने तैयार किया था। मामा भूमि पर विमान उतरा और उससे चीतों के बाड़े उतारे गये जिनके दर्शन को सबसे पहले चैनल पर दिखाने की इस कदर होड़ मच गयी कि कैमरों के लेन्स भी कहने लगे होंगे कि थोड़ा रहम करो, हमें और भीतस्वीरें लेनी हैं।

चीतागमन के दूसरे दिन से चीता चरित का अखण्ड पाठ आरंभ हुआ। कौन चीता कितने दिन का है? कितने ग्राम का है? कितने मेलस हैं और कितनी फीमेल्स हैं? किसको क्या पसंद है तथा क्या ना पसंद है? यहां तक बताया गया कि इन्होंने 8280 किमी. का सफर खाली पेट तय किया है, जबकि वो बाड़े से एक कदम भी आगे नहीं बढ़े। पशु विज्ञानियों को इतनी बातें चीतों के बारे में नहीं पता होंगी, जितनी इन एंकरों ने उनके विषय में हमें बता दीं। चीतों की डाइट- हाइट- फाइट पर जमकर लाइट (प्रकाश) डाला गया। यदि चीते खूंखार एवं मांस भक्षी नहीं होते तो एंकर महोदय उन्हें स्टूडियों में गद्देदार सोफों पर बैठाकर इंटरव्यू ले रहे होते या उनके माँदों से लाइव अपडेशन चल रहा होता कि अब चीतों ने गर्दन झुका कर लाने वालों को सलाम किया। अब अपनी जीभ निकाल कर तलवे चाटने की कोशिश की। अब उन्होंने दुम हिलायी। परंतु बेचारे एंकर मजबूर हैं। क्योंकि बिके हुए जमीर से जान को बचाना है।

दीपावली का त्योहार तो केवल पांच दिन तक ही चलता है, किंतु मीडिया द्वारा मनाई गई चीतई दिवाली हफ्तों अनवरत चलती रही। इससे सबसे अधिक फायदा चीतों को हुआ। क्योंकि जब तक वो नामीबिया में थे, तब तक उन्हें अपने पूर्वजों और इतिहास की जानकारी नहीं थी, लेकिन यहां पर आने से एंकरों ने उन्हें भूत, भविष्य और वर्तमान के दर्शन दूरदर्शन के प्रदर्शन के माध्यम से करवा दिए। कल्पना नारों, डिबेट बमों, गुणगाथा लड़ियों तथा बतझड़ियों ने चीतई दीवाली में चार चाँद लगा दीं। हर एंकर का चेहरा मिष्ठानाभसेदम कर हाथा। अंत में ऐसे जांबाज मीडिया ईशूरमाओं को मेरी ओर से एक नज़राना पेश है।

आए भारत प्लेन से, चीते कुल थे आठ।
गाल बजायी मीडिया और बढ़ गए ठाठ।।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) 8604112963

दीपोत्सव जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
HAPPY
Diwali
रतनी देवी चौधरी
जिला प्रमुख
माधवलाल चौधरी
भाजपा प्रभारी सेल संयोक
जिला परिषद सदस्य, जिला, परिषद राजसमंद

झिलमिल दीपों की आभा से प्रकाशित यह दीवाली
आपके घर आंगन में
धन-धान्य सुख-समृद्धि और ईश्वर का
अनंत आशीर्वाद लेकर आए शुभ दीपावली
-:शहरवासियों से अपील:-
◆ मास्क पहने रखें ◆ नो मास्क नो एंट्री ◆ खांसी, जुकाम होने पर नजदीक की स्वास्थ्य केन्द्र पर जावें ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें ◆ कागज, प्लास्टिक की बोतले, धातु के डिब्बे, कांच आदि अलग-अलग पात्र में डाले ◆ सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंके ◆ दीपावली समारोह के उपरान्त रात्रि सफाई करना ◆ प्रशासन शहरों के संग अभियान का पूरा लाभ उठावें 01 भू-उपयोग परिवर्तन 02 भूखण्डों का उप विभाजन 03 स्टेट ग्रान्ट के पट्टे 04 अधिसूचि कच्ची बस्ती के पट्टे 05 नाम हस्तान्तरण आदेश 06 खाचां भूमि का आवंटन 07 नगरीय विकास कर की राशि जमा करा छूट का लाभ प्राप्त करें उक्त समस्त योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें। अपने घरों एवं आस पास गन्दा पानी एकत्रित न होने दे।
HAPPY
Diwali
हाजी मीरू खां मंसूरी
उपाध्यक्ष
कैलाश मेवाड़ा
अध्यक्ष
राधेश्याम खटीक, चिंकी उर्फ पिंकी, प्रकाश खटीक, दिनेश लक्षकार, प्रमोद शाकद्वीपीय, प्रकाश पालीवाल, सुरेश खीची, जया कंवर राठौड़, नीलम टेलर, चन्द्रीका टेलर, रेखा लौहार, नीलम मेवाड़ा, टीना खटीक, रमण कंसारा, दिनेश सरणोत, राजेन्द्र जैन, ललित मेवाड़ा, जितेन्द्रसिहं पंवार, हेमलता रेगर, मांगीलाल रेबारी, पूनम पालीवाल, मुकेश रेगर, वरदुलाल कुमावत
मनोनित पार्षद : श्यामु कुमारी लौहार, ताहिर अली, जगदीश बुनकर, संदीप हिंगड़
कार्यालय नगर पालिका आमेट, जिला-राजसमंद

दीपावली पर्व पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मार्बल ब्लॉक व लफर उपलब्ध
सोनी मार्बल्स माइंस
मोरवड़ (धर्मेटा), तहसील व जिला राजसमंद
मो. 98290-42917

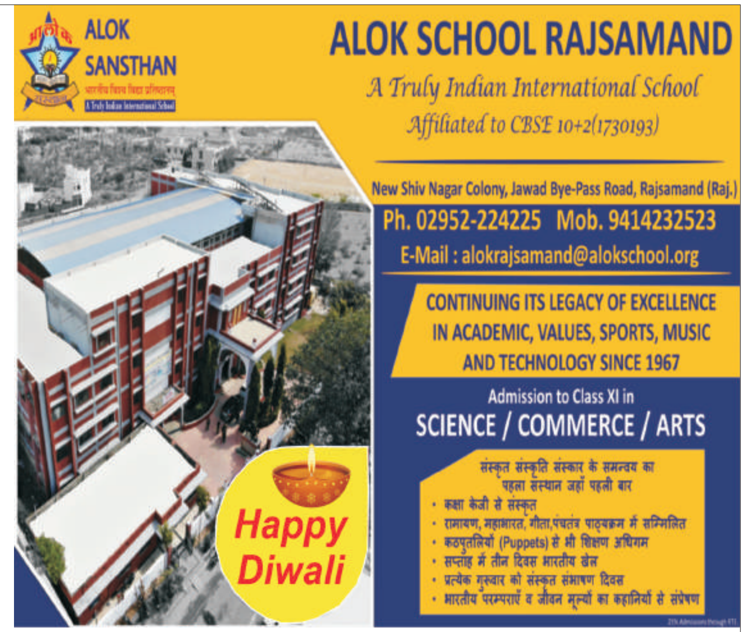
ALOK SANSTHAN
ALOK SCHOOL RAJSAMAND
A Truly Indian International School
Affiliated to CBSE 10+2(1730193)
New Shiv Nagar Colony, Jawad Bye-Pass Road, Rajsamand (Raj.)
Ph. 02952-224225 Mob. 9414232523
E-Mail : alokrajsamand@alokschool.org
CONTINUING ITS LEGACY OF EXCELLENCE IN ACADEMIC, VALUES, SPORTS, MUSIC AND TECHNOLOGY SINCE 1967
Admission to Class XI in
SCIENCE / COMMERCE / ARTS
संस्कृत संस्कृति संस्कार के समन्वय का पहला संस्थान जहाँ पहली बार
• कक्षा केजी से संस्कृत
• रामायण, महाभारत, गीता,पंचतंत्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित
• कठपुतलियों (Puppets) से भी शिक्षण अधिगम
• सप्ताह में तीन दिवस भारतीय खेल
• प्रत्येक गुरुवार को संस्कृत संभाषण दिवस
• भारतीय परम्पराएँ व जीवन मूल्यों का कहानियों से संप्रेषण
Happy Diwali

समस्त क्षेत्रवासियों को
खुशियों के महापर्व
धनतेरस । रूप चतुर्दशी
।। शुभ दीपोत्सव ।।
गोवर्धन पूजा । भाई दूध
की हार्दिक शुभकामनाएं
शुभेच्छु
मिनरल ग्राइंडिंग एसोसिएशन
राजसमंद , राजस्थान
प्रभु श्रीराम से सभी के सुखद स्वास्थ्य समृद्धि एवं खुशहाली की मंगलमय कामना करते हैं
अध्यक्ष
गोवर्धन राठौड़

JK Marble
Leading Marble Mines of the World
Shubh Diwali
Arora's J.K. Natural Marbles Ltd.
Morwar Rajsamand, Rajasthan-313324

लघु कथा

एक भील बालक का त्याग

एक बार महाराणा प्रताप पुंगा की पहाड़ी बस्ती में रुके हुए थे। बस्ती के भील बारी- बारी से प्रतिदिन राणा प्रताप के लिए भोजन पहुंचाया करते थे। इस कड़ी में आज दुद्धा की बारी थी, लेकिन उसके घर में अन्न का दाना भी नहीं था, दुद्धा की मां पड़ोस से आटा मांगकर ले आई और रोटियां बनाकर दुद्धा को देते हुए बोली, ले! यह पोटली महाराणा को दे आ। दुद्धा ने खुशी- खुशी पोटली उठाई और पहाड़ी पर दौड़ते भागते रास्ता नापने लगा। घेराबंदी किए बैठे अकबर के सैनिकों को दुद्धा को देखकर शंका हुई, एक ने आवाज लगाकर पूछाए क्यों रे! इतनी जल्दी- जल्दी कहां भागा जा रहा है? दुद्धा ने बिना कोई जवाब दिए, अपनी चाल बढ़ा दी। मुगल सैनिक उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे भागने लगा, लेकिन उस चपल- चंचल बालक का पीछा वह जिरह बख्तर में कसा सैनिक नहीं कर पा रहा था। दौड़ते- दौड़ते वह एक चट्टान से टकराया और गिर पड़ा, इस क्रोध में उसने अपनी तलवार चला दी।

तलवार के वार से बालक की नन्हीं कलाई कटकर गिर गई। खून फूट फूट कर बह निकला, लेकिन उस बालक का जिगर देखिए, नीचे गिर पड़ी रोटी की पोटली उसने दूसरे हाथ से उठाई और फिर सरपट दौड़ने लगा। बस, उसे तो एक ही धुन थी। कैसे भी करके राणा तक रोटियां पहुँचानी हैं। रक्त बहुत बह चुका था, अब दुद्धा की आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा, उसने चाल और तेज कर दी, जंगल की झाड़ियों में गायब हो गया। सैनिक हक्के- बक्के रह गए कि कौन था यह बालक?

जिस गुफा में राणा परिवार समेत थे, वहां पहुंचकर दुद्धा चकराकर गिर पड़ा। उसने एक बार और शक्ति बटोरी और आवाज लगा दी, राणाजी! आवाज सुनकर महाराणा बाहर आए, एक कटी कलाई और एक हाथ में रोटी की पोटली लिए खून से लथपथ 12 साल का बालक युद्ध भूमि के किसी भैरव से कम नहीं लग रहा था।

राणा ने उसका सिर गोद में ले लिया और पानी के छींटे मारकर होश में ले आए। टूटे शब्दों में दुद्धा ने इतना ही कहा, राणाजी! ये रोटियां, मां ने भेजी हैं। फौलादी प्रण और तन वाले राणा की आंखों से शोक का झरना फूट पड़ा, वह बस इतना ही कह सके, बेटा तुम्हे इतने बड़े संकट में पड़ने की कहा जरूरत थी?

वीर दुद्धा ने कहा- अन्नदाता! आप तो पूरे परिवार के साथ संकट में है... माँ कहती है, आप चाहते तो अकबर से समझौता कर आराम से रह सकते थे, पर आपने धर्म और संस्कृति रक्षा के लिए कितना बड़ा त्याग किया, उसके आगे मेरा त्याग तो कुछ नही हैं। इतना कह कर वीरगति को प्राप्त हो गया दुद्धा।

राणा जी की आखों में आंसू थे। मन में कहने लगे- धन्य है तेरी देशभक्ति, तू अमर रहेगा, मेरे बालक। तू अमर रहेगा।

अरावली की चट्टानों पर वीरता की यह कहानी आज भी देशभक्ति का उदाहरण बनकर बिखरी हुई है। भील दुद्धा जैसे बालक हमारे इतिहास के गौरव और संस्कृति के आधार हैं। धर्म व देश की रक्षा में सबका समान योगदान रहा है। जात- पात, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा का भ्रम तोड़कर केवल हिंदुस्तानी होने का गर्व होना चाहिए।

छोटी-छोटी बातों को तो हम बाद में भी निपटा सकते है, पर हम निजी स्वार्थ व लोभ लालच के चलते जब एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाएंगे, अपनी ऊर्जा आपस में नष्ट करेंगे, सुपंथ छोड़ देंगे तो दुश्मन हमारे अस्तित्व को समाप्त कर देगा। इतिहास का दोहरान न करें, हम कई बार आपसी राग द्वेष व ईर्ष्या से अपना नुकसान कर चुके हैं। हर बार आँखे तब खुली, जब चिड़िया चुग गई खेत। उस समय कुछ होगा नहीं।

आओ हम सब एक बार वापस दुद्धा व प्रताप बन कर एक दूसरे के लिए जिए, धर्म व संस्कृति को बचावें।

अजयसिंह चौहान
सरपंच

दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें।
* अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।

किशनलाल खटीक
उपसरपंच

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर

ग्राम पंचायत कोठारिया, पंचायत समिति, खमनोर, जिला-राजसमंद

कर्म की बात पितृपक्ष पर

क्या आप भी स्वर्ग की मोक्ष की चाह रखते हैं और समझते हैं कि आपकी संतान के कुछ अनुष्ठान करने से आपकी आत्मा का कल्याण हो जाएगा। कभी हमने विचार किया है कि अगर विधाता का कोई विधान है तो उसको कोई भी बदल नहीं सकता है। पहले थोड़ा चिंतन इस विषय को लेकर करते हैं कि हम सभी अपने वास्तविक जीवन में आचरण करते समय क्या इस बात पर ध्यान देते हैं कि हम कैसे कर्म करते हैं। चलो विचार किया जाये, होता क्या है समाज किस ढंग से चल रहा है।

हम अपने जीवन में अपने स्वार्थ की खातिर उचित अनुचित की परवाह कब करते हैं। केवल अपने स्वार्थ के लिए हम अन्य सभी के हितों के विपरीत आचरण ही नहीं करते कई बार कोशिश करते हैं औरों की भलाई की राह में भी रोड़े अटकाना, अड़चन डालना अपने अहंकार और ताकत या सरकार तक पहचान, पहुंच का उपयोग किसी की भलाई के लिए करने को आगे नहीं आते, लेकिन इसके विपरीत करने को अवश्य खड़े हो जाते हैं। जो कार्य खुद करते हुए अच्छा समझते हैं, कहीं वही कहीं कोई और करता है, तो खराब घोषित कर विरोध करते हैं। क्योंकि हम सही गलत की नहीं, अपनी सुविधा और कठिनाई की चिंता करते हैं। और ऐसा हर जगह किया जाता है, कारोबार से लेकर कर्मकांड करने तक। बड़ों का आदर नहीं करते, दिखावा करते हैं, सबके सामने आदर और अकेले में अपमानित या अवांछित होने का एहसास, मगर जब माता पिता नहीं रहते, तब उनके नाम पर दान और जाने क्या क्या दिखावा करते हैं, मगर वास्तव में अपनी शान का आडंबर करते हैं। हम नहीं सोचते कि जो दान किसी अभिलाषा से किया जाता है, दान नहीं व्यापार कहलाता है। आज आपको इक कथा सुनाते हैं इस विषय को समझने के लिए। इक राजा महात्मा बुद्ध जी के पास आता है, बताता है कि उसको सपने में स्वर्गवासी पिता आये हैं और ज्ञानीजन लोग कहते हैं उनकी मुक्ति नहीं हुई है, उनकी आत्मा की शांति सद्गति के लिए कोई धार्मिक अनुष्ठान करना चाहिए। बुद्ध जी से निवेदन करते हैं कि आप ही ये कार्य करवाएं तो कृपा होगी। महात्मा बुद्ध जी राजा को कहते हैं वो करेंगे और उनको व्यवस्था करनी है दो मिट्टी के घड़े नदी किनारे लेकर आना है, एक घड़े में घी और एक में कंकर पत्थर भरे होने चाहिए।

राजा ये व्यवस्था करता है, तो महात्मा बुद्ध जी दोनों घड़ों को नदी में बहाने को कहते हैं। उसके बाद इक लकड़ी देते हैं और उससे दोनों घड़ों को फोड़ने का आदेश देते हैं। ऐसा ही राजा करते हैं और बुद्ध समझाते हैं कि देखो जिस घड़े में कंकर पत्थर भरे हुए थे, नीचे डूब गए हैं और जिस घड़े में घी भरा हुआ था वो ऊपर पानी पर तैरता नज़र आ रहा है। बुद्ध जी सवाल करते हैं कि राजन कुदरत का नियम है, कंकर पत्थर नीचे डूबते हैं और घी ऊपर तैरता है। क्या मैं या कोई और किसी ताकत से कुदरत के नियम के विपरीत कर सकता है। नहीं, कभी नहीं, कोई भी नहीं, राजा जवाब देते हैं। तब बुद्ध बताते हैं कि यही हमारे कर्मों का फल का आधार है और अगर हमारे पूर्वजों ने भले कर्म किये थे तो उनको उनका फल अच्छा मिला होगा और अगर बुरे कर्म किये थे तो उनको बुरा फल ही मिलेगा, कोई और इसमें कुछ भी नहीं कर सकता है।

हमारी दुविधा यही है कि हमने धर्म को जाना नहीं, समझा नहीं, बस धार्मिक होने का दावा करते हैं।

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ व्यंग्यकार
फतेहाबाद, हरियाणा

व्यंग्य

झम्मन की फुलझड़ियां

झम्मन में कपड़ों की तरह किराये के मकान बदलने की आदत है। बेचारे इतने सीधे हैं, जब भी कोई छोटी मोटी वारदात होती है, झम्मन का नाम बड़े सम्मान से ले लिया जाता। जहां किराये पर मकान लिया, इलाका रोशन हो गया। अखबार में चर्चा न हो, लेकिन इलाके में चर्चा अवश्य होती। एक सप्ताह आराम से गुजरा। घर जमाने, बच्चों से दोस्ती करने, पड़ोसियों को अहसास कराने में थोड़ा वक्त तो लगता है। जब बच्चों से दोस्ती हो जाए तो काम आसान हो जाता है। बच्चे मन के सच्चे, सच्चे मन की गुस्ताखी माफ।

होली है बहुत दूर, क्यों न दिवाली पर फुलझड़ियां छोड़ दी जाएं। सुबह- सुबह बच्चों की टोली पैदल स्कूल की ओर दौड़ पड़ी। झम्मन ने बच्चों को घेर लिया। सबको चॉकलेट खिलाई, फिर बात बताई। चॉकलेट मुंह में, इसलिए मुंह बंद। सबने सुना और जोर से हुर्रे बोला। बच्चे घर की ओर और झम्मन ऑफिस की।

बच्चे स्कूल घर पहुंचे, तो घरवाले हैरान। अरे भाई क्या हुआ? क्यों स्कूल से भाग आए? सबका एक ही जवाब- नेताजी की भैंस गई पानी में। खैर वर्मा जी को दाल में काला नज़र आया और फटफटिया स्कूल तक दौड़ा दी। स्कूल चल रहा था। शाम को सभी झम्मन के घर। झम्मन ने सबको मिठाई खिलाई। बिठाया और कहा जब से आया हूं, बच्चों को जोर से हुर्रे करते हुए नहीं सुना। छुट्टी की बात सुनते ही, खिलखिलाते हुए बच्चों को आप देखते तो मेरी तरह खुश हो जाते। बच्चों की खुशी के लिए, थोड़ा उद्दण्ड हुआ जाए। झम्मन की भाषाई मिठास गुड़ से ज्यादा थी। जितने भर कर गए थे, उससे ज्यादा खाली होकर लौटे। झम्मन तरह- तरह की फुलझड़ियां छोड़ने में माहिर थे। यह तो छोटी सी फुलझड़ी थी। दिवाली दूर थी, पटाखे भी चलने थे। जिससे आवाज हो और आनन्द भी आए। जरूरी नहीं कि हर पटाखा चलने के बाद आनन्द दे? कुछ तटस्थ पटाखे होते हैं, न फूटते हैं न आवाज करते है, न आनन्द देते हैं, न कसमसाहट छोड़ते हैं। इन पटाखों से न गरीबी की आवाज आती है और न रईसी का खुमार। जो किसी के काम न आ सके, वह आदमी किस काम का? झम्मन को फुस्स पटाखे पसंद नहीं। इनसे न मनोरंजन होता है, न ज्ञान मिलता है। ऐसे पटाखों पर समय और पैसा बर्बाद क्यों किया जाए?

वर्मा जी और शर्मा जी फुस्स पटाखे नहीं थे। हर बात में आगे, फटे में टांग अड़ाने की आदत। दोनों में गाढ़ी दोस्ती। झम्मन को दोस्ती में फुलझड़ी जलाने की सूझी। दोस्ती की गहराई चाय पर गरम करके नापने की सोची। चाय गरम होगी तो पकोड़ी (भजिए) अपने आप तल जाएगीं। अरे वर्मा जी, ये शर्मा जी तो उस दिन कह रहे थे कि आप तो बहुत ही... आदमी हैं? शर्मा जी सकपका गए। अरे झम्मन भाई मैंने ऐसा कब कहा? झम्मन ने कहा अरे मैंने तो ऐसा इसलिए कहा कि एक दिन वर्मा जी भी, आपके बारे में यही कह रहे थे। बस क्या था, दोनों की गर्मी चाय में आ गई। पकोड़ी तल गईं। झम्मन मुस्करा रहे थे।

झम्मन ने दोनों को शांत करते हुए कहा- बस इतनी सी बात पर गाढ़ी दोस्ती पिघल गई। मैंने तो बस आजमाने के लिए कहा था कि दूसरों की बातों पर कितना विश्वास कर लेते हो? वर्मा जी और शर्मा जी ने एक-दूसरे को गले लगाया। झम्मन को चाय पर गरम करने और पकोड़ी तलने के लिए धन्यवाद भी दे डाला। झम्मन की फुलझड़ियों की रोशनी में सब डुबकी लगाने लगे। झम्मन ने किसी महिला पर कोई फुलझड़ी नहीं छोड़ी। झम्मन का ड्राइंग रूम बच्चों से सजने लगा। झम्मन ने दिवाली बम बनाया। बच्चों से घर- घर बम भेज दिया। बड़ी दिवाली का कौन इंतजार करता, छोटी दिवाली पर बम फट गया। शर्माइन, वर्माइन, सबने घर- घर जाकर एक दूसरे की साड़ी देखी। फिर समझ में आ गया झम्मन फुलझड़ी छोड़ गए। दिवाली के दिन सभी का भोजन झम्मन के घर।

सबके आग्रह पर झम्मन ने फुलझड़ी का राज खोला। बचपन तो बचपन में खो गया। बच्चों के हाथ में फुलझड़ियों की रोशनी से चमकते चेहरे और मासूम चेहरों पर निच्छल हंसी मन मोह लेती है। खाली हाथ देख मन उदास हो जाता है। कोई ऐसा चमत्कार नहीं कर सकता। हर हाथ में फुलझड़ियां हो और चेहरे पर मुस्कान हो। बची फुलझड़ियों को छोड़ने के लिए झम्मन का सामान दूसरे दिन ट्रक पर लद रहा था।

सुनील जैन 'राही'
वरिष्ठ व्यंग्यकार
नई दिल्ली, 9810 960 285

विचार

शिक्षक साहित्य एवं संस्कृति के पहरुए

प्रत्येक समुदाय एवं राष्ट्र का अपना साहित्य होता हैं। अपनी अनूठी संस्कृति होती हैं। साहित्य एवं संस्कृति से समाज के विभिन्न वर्गों की मौलिक पहचान स्थापित होती आई हैं। विश्व के विभिन्न भागों में निवासित नागरिकों के अपने राष्ट्र की धूरी उनका साहित्य एवं संस्कृति ही हैं। समाज में परिवर्तन गतिशील होते हैं, यह परिवर्तन एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित होते रहते हैं। मगर कुछ मूल्य स्थायी रहकर बिना किसी मूल स्वरूप में बदलाव हुए पीढ़ियों तक प्रवाह मान होते रहते हैं। मन में प्रश्न यह उठता है कि बिना किसी परिवर्तन के उक्त सामाजिक प्रतिमान उसी भाव में साहित्य संस्कृति से संयुक्त कौन आगे बढ़ाते हैं? क्या समाज का अभिजात्य जाति वर्ग, क्या शासक वर्ग, क्या व्यापारी वर्ग, क्या मध्यम वर्ग या मजदूर वर्ग ।

मेरा यह मानना है कि समाज के विभिन्न आजीविकाओं में संलग्न श्रेणी में से शिक्षक संवर्ग ही ऐसा संवर्ग है, जिसने अनादिकाल से सृष्टि की रचना के विकास के बाद साहित्य संस्कृति को आगे बढ़ाया हैं। शिक्षक का आशय अलग- अलग कालखंड में अलग- अलग हो सकता हैं। चाहे राजकीय नौकरी, पेशा शिक्षक या गुरुकुल परंपरा के गुरुजी। हजारों वर्षों पूर्व तो समाज के कुछ प्रबुद्धवर्ग को शिक्षक पद देकर कर बहुत कुछ जिम्मेदारी प्रदान की थी। यहां तक कि कुछ लोगों ने तो स्वप्रेरित होकर बिना थोपे बिना सौंपे ही शिक्षक के रूप में अपने जीवन को समर्पित किया हैं। साहित्यकार या शिक्षक दरबारी हो या सरकारी सदैव नैतिक सामाजिक राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना संरक्षण संवर्धन ने अपना सर्वस्व अर्पित किया हैं। उनकी दीर्घ साहित्य साधना एवं तपस्या से आज भारत का स्वर्णिम विराट साहित्य हमें देखने को पढ़ने को मिलता हैं।

आज 5 सितंबर शिक्षक दिवस पर हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि शिक्षक ही वास्तव में साहित्य संस्कृति के पहरुए हैं रक्षक हैं, सरंक्षक हैं, पोषक हैं। अपने जीवन का तन- मन- धन एवं समय लुटा कर साहित्य के सच्चे पहरेदार बने हुए हैं। शिक्षा देना तो उनका राजकीय दायित्व है, इसे बखूबी निर्वहन करते हुए स्वैच्छिक भाव से साहित्य सृजन करना प्रकाशन करना उनके जीवन की पहचान रही हैं।

शिक्षक उत्तम पवित्र पेशा हैं। जिसे हर वर्ग अपनाना चाहता हैं, चाहे वह राजनीति के शिखर पर अपनी सेवाएं दे चुका हो। जैसे डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम आदि। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक भारत एक खोज एवं अन्य कृतियां आज अपने देश की धरोहर हैं।

समुदाय एवं राष्ट्र की नैतिक पहचान बनाते हुए सरंक्षित रखने में शिक्षक ने हजारों वर्षों से अपनी ऊर्जा समर्पित की है। अनगिनत शिक्षकगण स्वयं साहित्यकार बनकर समाज में वांछित परिवर्तन में नेतृत्व किया हैं। लेखनी के ध्वजवाहक बनकर सभी को प्रेरित पोषित किया हैं।

समाज में क्रांति की मिसाल शिक्षक हैं, समाज में शांति के दूत शिक्षक हैं। सामाजिक विकास के अग्रदूत शिक्षक हैं। समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द के फरिश्ते शिक्षाकवृन्द हैं। धर्म एवं संस्कृति के पल्लवन पोषण में निस्वार्थ अभिभावक शिक्षक ही हैं। आज शिक्षक दिवस पर समस्त शिक्षकगण के प्रति उनके हजारों सालों के अमूल्य कालजयी योगदान को नमन करता हूं।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
शिक्षक एवं साहित्यकार
साकेत साहित्य संस्थान राजसमंद

समस्त जिलेवासियों को दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

द मेवाड़ स्पोर्ट्स क्लब

कैलाश चौधरी — अध्यक्ष
रघुराजसिंह सिसोदिया — उपाध्यक्ष
अजय कर्णावट — सचिव
सतीश तापड़िया — कोषाध्यक्ष

जेके स्टेडियम के पास, आरके जिला चिकित्सालय के पीछे राजसमंद, फोन : 02952-224549

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

नकली फूलों के मोह में मुरझाते रिश्ते

दीपावली के दिन सुबह गांव से फूलों की गाड़ी लेकर शहर जाने वाला माली शाम को जब गांव लौटा तो उसका मुंह लटका हुआ था। कारण पूछा तो बोला- तीन माह से बड़ी मेहनत और लगन से खेत में और आशा के फूल मन में उगाए थे कि दीपावली पर सारे फूल बेचकर अच्छे पैसे कमाऊंगा, मगर आज जब फूलों की गाड़ी भरकर शहर गया, तो बड़ी निराशा हाथ लगी। क्योंकि वहां तो दुकानों में सजे कागज व प्लास्टिक के नकली रंग बिरंगे फूलों के ढेर पर ग्राहक टूट रहे थे। लोगों के दिखावटी नकली फूलों के आकर्षण को देखकर असली फूल खुद शर्म से मुरझाने लग गए। इसलिए महीनों की मेहनत पर पानी फिर गया।

उसकी बात सुनकर मैंने कहा आजकल लोगों को सच के आवरण में लिपटा झूठ ही पसंद आ रहा है। इसलिए वास्तविक सच से सभी ने दूरी बना ली है। आजकल सभी त्योहारों का उत्सव मोबाइल द्वारा ही मनाया जाता है। जन्मदिन, राखी या दिवाली सभी त्योहार की सफलता फेसबुक, इंस्ट्राग्राम के लाइक, कमेन्ट ही तय करते हैं। कभी हमारी जिन्दगी में यह मोबाइल फोन घुसा था, मगर अब तो हमारी जिन्दगी ही इस मोबाइल में घुसती जा रही है। इस आभासी दुनिया ने वास्तविक रिश्तो को किनारे कर दिया है। मोबाइल पर कोरोना वायरस की तरह संक्रमित होते अनगिनत दीपावली की बधाई के संदेश ने अपने मित्र या रिश्तेदार के आत्मीय लगाव को फिका कर दिया है। कभी पच्चीस पैसे के पोस्टकार्ड पर अपने हाथों से लिखे शब्दों में लोग अपने हृदय की धड़कने समेट कर अपने प्रिय को भेजते थे और पत्र को प्राप्त करने वाला भी उस पत्र को बार- बार पढ़कर उस अहसास को जीवन्त करता था। प्रिय के मधुर भावों से परिपूर्ण उन पत्रों को पढ़कर अक्सर आंखें नम हो जाया करती थी। मगर कॉपी- पेस्ट के जमाने में अब वो भावनाएं लुप्त हो गई है। दीपावली पर बड़ों के चरण स्पर्श करने की परम्परा भी अब गिने चुने घरों में बची हुई है। वरना अब बड़े छोटे सभी को हैप्पी दीवाली कहकर औपचारिक निर्वहन किया जाता है।

आजकल चाइना ब्रांड लाइटों की रोशनी ने घी के दीपक को शर्मिंदा कर दिया है। मिट्टी के दीपक को बेचने वाले कुम्हार भी आजकल कोई दूसरा धन्धा ढूंढ रहे हैं।

कभी त्योहार पर घरों में असली घी से हलवा, लापसी या बेसन चक्की में मां पिताजी के हाथों की महक मिठाई के स्वाद को दुगुना कर देती थी, मगर आजकल बाजार में चमकीले डिब्बे में सजी चांदी रंग के बरक तले दबी नकली मावे की मिठाई से लोग खुशियां बांटते नजर आते हैं। इस मिठाई पर शुद्धता की गारंटी का टेग लगा रहता हैं। ठीक इसी तरह रिश्तेदारों को भी हर मौके पर मैसेज भेज भेजकर अपनेपन का प्रमाण देना पडता हैं और ये प्रमाण ही अक्सर मिठास में संदेह पैदा करते हैं। आजकल असल जिन्दगी में भी फिल्मी अभिनय बढ़ गया है। माता- पिता या भगवान के सामने प्रणाम करते हुए फोटो भी लोग सोशल मीडिया पर डालते हैं, मगर अन्य वो लोग भी अपने माता- पिता या भगवान के प्रति उतने ही विनम्र होते हैं, जो इस तरह के फोटो डालने में विश्वास नहीं करते। नकली फूलों की तरह दिखावटी बधाई व शुभकामनाओं से हमारे असल रिश्तों के फूल मुरझाते दिख रहे हैं। हम नए दौर की नवीनता अपनाते हुए भी अपने रिश्तों को सिर्फदिखावटी एक दिन ही नहीं, बल्कि वर्षभर अहमियत दे, तभी जीवन की सार्थकता है।

दीपोत्सव पर समस्त क्षेत्रवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

चन्द्रभानसिंह चुण्डावत
सरपंच

कोरोना वायरस के लक्षण :- बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ
सावधानिया :- नियमित रूप से साबुन से हाथ धोएं, छींकते और खांसते समय नाक, मुंह ढकें और अलग कमरे में सोयें, जिस व्यक्ति को खांसी या बुखार के लक्षण हो उससे दूरी बनायें पंचायत को स्वच्छ बनाएं रखने में सहयोग करें, सिंगल युज प्लास्टिक का उपयोग न करें।

आपका वोट सहयोग देगा एक सुदृढ़ भारत निर्माण में, अपना फर्ज निभाएं मतदान करने जरूर जाएं।

शंभूसिंह रावत-उप सरपंच,

वार्डपंच :- छगनीदेवी, भीमाराम भील, जसवन्तलाल खटीक, कंवरीदेवी, भोलीदेवी, सवाईराम गुर्जर, जग्गूसिंह, जमनादेवी, कमला कुंवर, लालीदेवी

ग्राम पंचायत जीरण, पंचायत समिति देवगढ़

तनसुख बोहरा

समस्त जिलेवासियों को दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

नरेन्द्र बोहरा

वेलकम मार्मो प्रा.लि. -केलवा

समस्त जिलेवासियों को दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

नानालाल सार्दुल
अध्यक्ष
जिला मार्बल कटर एसोसिएशन, राजसमंद

साहित्य समाज का दर्पण : कोठारी

राजसमंद. शहर के **धोइंदा स्थित सुभाष पब्लिक स्कूल में** आयोजित संस्थान के रजत जयंती समारोह के दौरान साहित्यकार सम्मान समारोह व बाल कवि सम्मेलन का आयोजित किया गया, जिसमें विचार व्यक्त करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार चतुर कोठारी ने साहित्य को समाज और संस्कृति का दर्पण बताया।

विद्यालय के बाल साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं की प्रशंसा करते हुए कोठारी ने नवोदित साहित्यकारों को साहित्य लेखन के गुर भी सिखाए। आयोजित कार्यक्रम में साकेत साहित्य संस्थान के कवियों द्वारा समसामयिक विषयों पर काव्य पाठ किया गया जिसमें शिक्षा का महत्वए नारी सम्मानए भारत भूमि के गौरवए ऐतिहासिक घटनाओं व वीर पुरुषों के शौर्य को अपने साहित्य में समाहित करते हुए कविता पाठ किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य त्रिलोकी मोहन पुरोहित ने की। वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि चतुर कोठारी, मुख्य अतिथि साकेत साहित्य संस्थान अध्यक्ष परितोष पालीवाल, वरिष्ठ साहित्यकार दिनेश श्रीमाली, नारायणसिंह राव, सत्यनारायण नागोरी, हेमेंद्रसिंह चौहान, कुसुम अग्रवाल, रामगोपाल आचार्य, रोशनलाल गर्ग, रविनंदन चारण, कमलेश जोशी, राधेश्याम राणा, देवकीनंदन नंदवाना, दीपलता कुमावत, डिंपल कुमावत, कमल अग्रवाल, धर्मेंद्र बंधु, प्रेम कुमावत आदि साहित्यकार उपस्थित थे।

साकेत साहित्य संस्थान द्वारा साहित्यकार कमलेश जोशी द्वारा संपादित हिंदी भाषा के सम्मान को समर्पित पुस्तक हिंदी माथे की बिंदी का विमोचन किया गया । संचालन वरिष्ठ प्राध्यापक गिरिराज काबरा ने किया

बालक की जिज्ञासा

उधर सजी दीपों की माला
इधर ना एक दीप जलाया
बोला मां तुम कुछ तो बोलो
तुमने क्यों ना दीप जलाया
बोला मां तुम कुछ तो बोलो...

देखो उस रामु को देखो
उसने कैसा रूप बनाया
पहन के कितने अच्छे कपड़े
अपने घर से बाहर आया
बोला मां तुम कुछ तो बोलो...

कितना चीखा और रोया हूं
एक भी कपड़ा नहीं सिलाया
रो रो कर में हार गया पर
कोई खिलौना नहीं दिलाया
बोला मां तुम कुछ तो बोलो...

बाजारों में ढेरों मिठाईयां
रूखा सुखा भी न खिलाया
बोलो मां तुम कुछ तो बोलो
ये कैसा त्यौहार मनाया
बोलो मां तुम कुछ तो बोलो... ।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
राजसमंद

तुम हो तो मैं हूं

तुम्हारी मुस्कराहट से प्रफुल्लित,
मैं नित पुष्प सी खिल जाती हूं।
जो तुम फैलाओ बांहें प्यार की,
गुलशन बन महकने लगती हूँ।

तुम्हारे होने से ही मेरा होना होता,
तुमसे ही शुरू मेरा हर दिन होता।
तुम्ही मेरे जीवन का उगता सूरज,
सूरज बिन न कभी नव भोर होता।

हो जब उदास चेहरा तुम्हारा,
होती खत्म सारी उम्मीदें मेरी।
पाती हूं जब थका हुआ तुम्हे,
जवाब दे देती है हिम्मत सारी।

जो तुम टूटने लगे जीवन में,
पल में टूटने लगते घुटने मेरे।
तुम्हारी हर चाहत की खुशी में,
खिलते हुए लगते अरमान मेरे।

तुम्हारी मीठी मुस्कान से ही,
लगती मीठी मुझको मिठाई है।
तुम हो तो जहाँ में मुझको,
सस्ते सारे लगते बाजार हैं।

लहराती रहें खुशियां हरदम,
हरि-हरियाली हो घर आंगन।
करती हूं अरदास प्रभु से नित,
रहे पुष्प सी मुस्कान आनन।

उलझी रहे नित सांसों की डोर,
मेरी- तुम्हारी सांसों की डोर से।
सुलझ न पाएं धड़कनें हमारी,
कभी एक- दूसरे के जिस्म से।।

श्रीमती प्रेम कुमावत
शिक्षिका, भाणा, राजसमंद

हमारे घर में भी दिवाली है

बना माटी के दीपक हमने अपनी दुकान सज़ा ली है।
खरीदना हमसे दीपक, हमारे घर में भी दिवाली है।।

इस बार लाएंगे अपने बच्चों की ख़ातिर नए कपड़े।
मेरी मुमताज़ ने ये आस अपने दिल में पाली है।।

इस दिवाली हम भी बनाएंगे घर पर मीठे पकवान।
अगर बिक गए हमारे सारे दीपक, कहे घर वाली है।।

लेकर देंगे पापा हम को इस ठंड में जूते और स्वेटर।
बच्चों ने भी अब यह आस अपने दिल में जगा ली है।।

पिछली दिवाली की तरहां इस बार ना बिके दिपक तो।
यह बात मेरी बूढ़ी मां ने अपने दिल से लगा ली है।।

सारी पूंजी लगा दी है इन दियों को बनाने में हमने।
लक्ष्मी पूजन की ख़ातिर अब ज़ेब बिल्कुल ख़ाली है।।

चाइनीज दीयों से अटा पड़ा है बाज़ार सारा।
जिसने हमारे घर की सारी खुशियां खा ली है।।

सस्ती लड़ियों और दीयों से तुम सजा लोगे घर अपना।
पर हमारे घर वालों की फिर से ये दिवाली काली है।।

खरीदना आप सभी इस बार बने माटी के दीये।
कुम्भकार ने अपनी खुशियां, 'ऐश' तुम पर डाली है।।

अश्वनी कुमार चावला 'ऐश'
शिक्षक एवं साहित्यकार
अनूपगढ़, श्री गंगानगर,
राजस्थान

दीपावली के पावन पर्व की जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

महेन्द्र कुमार कोठारी

विकास बालाजी ग्रुप

भाजपा प्रदेश सहसंयोजक व्यापार प्रकोष्ठ

MPS

Tea I Café I Masale

Mob. 9829040224

Rajsamand (Raj.)

शुभदिपावली

कन्हैयालाल खटीक

राजकुमार खटीक, शांतिलाल खटीक

लाल बाग, नाथद्वारा जिला-राजसमंद मो. 9414343097

दीपोत्सव

की हार्दिक शुभकामनाएं

जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जे.के. ग्राम कांकरोली (राज.)

JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

राजसमंद सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लिमिटेड, राजसमंद

उचित दाम | **अच्छी गुणवत्ता** | **शुद्धता की गारंटी**

सदस्यों को 1 फीसदी छूट

जिले में सहकारी दवाघर

आरके जिला अस्पताल, कमला नेहरू अस्पताल कांकरोली
सिटी डिस्पेंसरी राजनगर, गोवर्धन सामान्य अस्पताल नाथद्वारा
सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आमेट
देवगढ़, भीम, कुंभलगढ़, रेलमगरा खमनोर

आलोक चौधरी-महाप्रबंधक

राजसमन्द सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लिमिटेड राजसमंद

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

देश की हर प्रगति में,

हिंदुस्तान ज़िंक

के जस्ता, सीसा और चांदी की चमक...
इस दीपावली आइये जलाएं

Pragati Ki
Roshni

शुभ पर्व की शुभकामनाएं

www.facebook.com/HindustanZinc   www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.instagram.com/hindustan_zinc   www.twitter.com/hindustan_zinc   www.twitter.com/CEO_HZL

Hindustan Zinc Limited Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000-20 | www.hzlindia.com

बच्ची और भेड़िया

सभी न्यूज़ चैनलों पर पांच वर्षीया अबोध मासूम के बलात्कार पश्चात हत्या की खबरें आ रही थी। चैनल वाले ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में पांच वर्षीय अहाना से जानवरों ने किया एक सप्ताह तक ब्लात्कार, वहशी ने मरने से पहले तक किया रेप, अहाना बनी दरिंदगी का शिकार, मासूमियत पर हैवानियत हावी आदि शीर्षकों से न्यूज़ को फ्लैश कर रहे थे। क्या हुआ सात दिनों तक पांच साल की बच्ची के साथ पुरी दास्तान देखने के लिए आज रात नौ बजे देखिए हमारा विशेष कार्यक्रम सात दिन... दस बजे। देखिए वहशी भेड़िये के बीच बच्ची और ग्यारह बजे हैवानियत की बलिबेदी पर एक और मासूम लड़की, कब तक बेटियां होती रहेगी दरिंदगी की शिकार आदि विशेष कार्यक्रम का बीच- बीच में विज्ञापन आ रहा था। कमोबेश हर चैनल पर अहाना रेपकांड की ही चर्चा हो रही थी।

संजय के पास बैठी उसकी छह वर्षीय बेटी निधि पूछ बैठी- पापा यह बलात्कार क्या होता है। मासूम निधि के इस प्रश्न पर संजय सन्न रह गया। इससे पहले वह कुछ बोल पाता, उसकी बेटी आगे बोल पड़ी पापा रेप केवल लड़कियों के साथ ही क्यों होता है और यह भेड़िये कैसे बच्चियों को पकड़ लेते है। उसके बाल मन में इस प्रकार के ढेर सारे प्रश्नों का पनपना संजय को विचलित कर गया। वह समझ नहीं पा रहा था, आखिर बालमन को कैसे समझाया जाए।

उसने बातों को बहलाने के ख्याल से कहा- ऐसा है बेटा, जो बच्ची अपने मम्मी- पापा की बात नहीं मानती तो उसे जंगल के भेड़िये पकड़कर ले जाते है और मार देते हैं। पापा की बात सुन निधि सहम गई। फिर बड़ी मासूमियत से भय मिश्रित शब्दों से बोली। मैं हमेशा अपने मम्मी- पापा की बात मानूंगी। खेलने के लिए भी मुहल्ला या कॉलोनी से दूर नहीं जाऊंगी, नहीं तो यह जंगल के भेड़िये मुझे भी उठाकर ले जाएंगे और मेरा रेप कर मुझे।

वह पूरी बात कह पाती, इससे पहले ही संजय ने उसे अपने सीने से लगा लिया और मन ही मन चिंतन करने लगा कि इस बालमन को कैसे समझाया जाए कि वहशी भेड़िया जंगल की बजाय तथाकथित सभ्य समाज और मुहल्ला में हमारे ही बीच रहता है।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, महेशखूंट,
जिला खगड़िया (बिहार)
मो. 77659-54969

अथः श्री कोरोना कथा पुस्तक का विमोचन

आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर के रवींद्र स्पंदन मंच द्वारा डॉ. गोपाल राजगोपाल के कोरोना विषयक विविध रचना संग्रह अथ: श्री कोरोना कथा का विमोचन प्रादेशिक परिवहन अधिकारी एवं वरिष्ठ साहित्यकार पीएल बामनिया के मुख्य आतिथ्य तथा डॉ. लाखन पोसवाल, प्राचार्य एवं नियंत्रक आरएनटी मेडिकल कॉलेज की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधानाचार्य डॉ. एके वर्मा, डॉ. कीर्ति, डॉ. मेघश्याम शर्मा, छात्र संघ अध्यक्ष मोहित खंडेलवाल तथा श्रीमती राजकुमारी राजगोपाल उपस्थित रहे।

सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के पश्चात प्रारंभ हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बामनिया ने कहा कि कोरोना जैसे भयावह विषय पर कतिपय साहित्यकारों द्वारा छुट- पुट रचनाओं का सृजन तो हुआ है, लेकिन विपुल सृजन कर पुस्तकाकार के स्वरुप में जन मानस के सम्मुख लाने का जो महत्वपूर्ण कार्य डॉ. राजगोपाल ने किया है, वैसा शायद ही किसी ने किया हो। यह इसलिए भी संभव हुआ है कि डॉ. राजगोपाल स्वयं एक चिकित्सक हैं। पुस्तक का प्रकाशन ऐसे समय पर हुआ है, जब संसार कोरोना महामारी के प्रकोप से त्रस्त है। पुस्तक की समसामयिकता स्वयं सिद्ध है। सभी रचनाएं सशक्त और उद्वेलित करने वाली हैं। पढ़ते हुए पाठक की आँखों के सामने महामारी का सजीव चित्रण चल चित्र की भांति दृश्यमान होता है। कुछ रचनाएं गुदगुदाती भी हैं। उन्होंने अपनी ग़ज़लों की प्रस्तुति के माध्यम से श्रोताओं का बांधे रखा।

प्राचार्य डॉ. पोसवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि कई विधाओं की रचनाओं का समावेश होने के कारण यह पुस्तक अनूठी बन पड़ी है। पुस्तक हर आयुवर्ग और हिंदी व राजस्थानी भाषा वर्ग के पाठकों में व्यापक रूप से सराही और स्वीकार की जायेगी। इसमें बाल- कविताओं, बाल कहानियों के साथ व्यंग्य लेख, व्यंग्य कहानियां, लघु कथाएं, दोहे, कुंडलिया और राजस्थानी भाषा की रचनाएं भी सम्मिलित हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि यह पुस्तक चिकित्सक वर्ग और साहित्यप्रेमियों के साथ साथ आम पाठक वर्ग को भी रुचिकर लगेगी तथा दीर्घकाल तक कोरोना की भयावहता का स्मरण कराते हुए इस प्रकार के रोगों से बचाव का मार्ग भी प्रशस्त करेगी। शोधार्थियों के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में भी इस पुस्तक का उपयोग किया जा सकेगा। उन्होंने स्वरचित कविता की प्रस्तुति देकर हिंदी साहित्य के प्रति अपने स्नेह को प्रदर्शित किया।

पुस्तक सृजन पर अपनी बात रखते हुए डॉ. राजगोपाल ने बताया कि कोरोना काल में अपने चिकित्सकीय दायित्व के निर्वहन के साथ साथ रोगियों की संवेदनाओं से जुड़ते हुए इतनी सामग्री सृजित हो गई कि पता ही नहीं चला, तब मन में विचार आया कि क्यों न एक पुस्तक का प्रकाशन कर अपने विचारों को जन मानस पटल पर प्रस्तुत करूं। इसी का परिणाम अथ: श्री कोरोना कथा है, जो आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

कार्यक्रम के बाद काव्य गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। संचालन डॉ. हितेश गर्ग ने किया, जबकि धन्यवाद की रस्म रवींद्र स्पंदन मंच के सह सचिव डॉ. आशीष जैन ने निभाई।

दीपावली के पर्व की हार्दिक बधाई
और मंगल शुभकामनाएं

राजसमंद शहर को स्वच्छ व सुन्दर बनाए रखने में
आमजन नगरपरिषद का सहयोग प्रदान करें।

अशोक टांक
सभापति

जनार्दन शर्मा
आयुक्त

नगरपरिषद परिवार राजसमंद

परिश्रमी और निष्ठावान शिक्षक स्व. श्री राधारमण जी पालीवाल

श्री द्वारकाधीश प्रभु की पावन नगरी ने अपने यहां एक से एक बढ़कर भिन्न विधाओं के उत्कर्ष कार्य करने वाले महापुरूषों को इस माटी पर जन्म दिया। जिन्होंने अपने परिश्रम और निष्ठा से इस गांव के सभी समाजवासियों के भले के लिए और उनकी उन्नति के लिये पूरे जीवनभर प्रयास किये और समाज के उत्थान के लिये अपना पूरा जीवन खपा दिया। आज हम एक ऐसे ही समाजसेवी शिक्षक के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में इस गांव के लिए बहुत कुछ किया। बालकों के सर्वांगींण विकास और शिक्षा के लिए जीवन पर्यन्त लगे रहे स्व. श्री राधा रमण पालीवाल।

कांकरोली के धोरा मोहल्ला के पीपली चबुतरे के पास स्व. श्री गिरधारी लाल जी पालीवाल के घर माता श्री गुलाबी बाई की कोख से दिनांक 29 जून 1929 को अपने ननिहाल के गांव बागड़, तहसील रायपुर, जिला भीलवाड़ा में जन्मे स्व. राधारमण जी का बाल्यकाल कांकरोली में अपने पिताश्री व माताश्री की देखरेख व स्नेह रक्षण में हुआ। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। पढ़ने-लिखने में सदैव आगे रहने वाले व नई-नई जानकारियां प्राप्त करने की जिज्ञासा उनके मन में सदैव बनी रही, उन्होंने अपनी विद्या पूर्ण कर शिक्षक बनने का निश्चय किया और अपने निश्चय के अनुसार सन् 1952 में राजकीय सेवा में वे शिक्षक बन बालकों को पढ़ाने लगे।

मेरी उम्र जब 10 वर्ष थी, तब तक मैं स्कूल में नहीं जा सका। बस खेलना-कूदना, धमाल मस्ती ही मेरा काम था, मेरे पिताजी एक दिन मुझे श्री राधारमण जी के पिता श्री के खेत पर लेकर गए, जहां राधारमण जी के पिता स्व. गिरधारी लाल जी एक मकान बनवा रहे थे। मेरे पिताजी का गिरधारीलाल जी से अच्छा जाना पहचाना सम्बन्ध था। अत: वे उनसे बोले- आपके लड़के, मैंने सुना है कि मास्टर साहब हो गए है। मेरे इस लड़के को पढ़ाने के लिए स्कूल भेजना है और इसे पढ़ाना है, पास ही खड़े राधारमण जी ने एक सरसरी निगाह मुझ पर डाली और बोले चाचा आप चिन्ता मत करो, कल से ही इसे रोज नौ बजे इसी जगह भेज देना। इसकी उम्र भी ज्यादा हो गई है। इसे मैं कुछ दिन यहां पढ़ाकर होशियार कर दूंगा और तब तक तीन चार माह बाद जुलाई के नए सत्र में दूसरी या तीसरी कक्षा में भर्ती करा दूंगा। बस फिर क्या था, मेरे पहले गुरू अक्षर ज्ञान देने वाले गुरू श्री राधारमण जी ने नए सत्र में बालकृष्ण विद्या भवन हाई स्कूल में दूसरी कक्षा में प्रवेश दिला दिया और मेरी गाड़ी चल निकली, जिसने कहीं रूकने का नाम नहीं लिया और सच कहूं तो आज भी दौड़ रही है।

समय अनुसार आपका विवाह श्रीमती नर्बदादेवी के साथ हुआ। आपका भरा पूरा परिवार था, आपके एक भाई स्व. श्री शिवनारायण पालीवाल व तीन बहनें श्रीमती गंगादेवी, श्रीमती पार्वती देवी, श्रीमती गीता देवी व तीन पुत्र श्री लक्ष्मीनाराण, श्री जसवन्त , श्री देवेन्द्र कुमार व एक पुत्री श्रीमती हेमलता।

ऐसे कर्मठ परिश्रमी और शिक्षण के प्रति समर्पित शिक्षक श्री राधारमण जी एक जागरूक और उत्साही शिक्षक के रूप में याद किये जाते रहेंगे। सन् 1955 में नेशनल वालियन्टियर्स फोर्स आर्मी एवं सन् 1971 में जनगणना के कार्य में राष्ट्रपति द्वारा आपने कांस्य पदक प्राप्त किया। सन् 1976 में शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान भी आपने प्राप्त किया, जो उस समय बहुत बड़े गौरव की बात थी।

आप जहां- जहां अध्यापक रहे, वहां का परीक्षा परिणाम तो श्रेष्ठ रहा ही पर जनसहयोग से स्कूल भवन निर्माण के कार्य भी अविस्मरणीय रहे। रिछेड़, सैवन्त्री एवं धोईन्दा के विद्यालय भवन आज भी मूक भाषा में आपके प्रयत्नों की कहानी सुना रहे हैं। 5 जुलाई 1984 को आप रा.उ.प्रा.विद्यालय कांकरोली प्रथम के प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत हो गए, पर तब भी आप सरस्वती बाल निकेतन स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर रह बालकों को पढ़ाते रहे। कांकरोली के कई बुद्धिजीवियों के साथ आपके घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। श्री छन्नुलाल जी मास्टर साहब, सालगरामजी वकील साहब, नारायण लाल जी वर्मा आदि अनेक लोगों के साथ आप रोज शाम को राजसमंद की पाल पर घूमने जाते, जहां देश-विदेश की तमाम बातों और घटनाओं पर चर्चा होती थी। समाचार सुनने के आप बड़े शौकीन थे। देश या विदेश ऐसी कोई खबर नहीं होती थी, जो आपकी जानकारी में न हो। वे अपने पास हमेशा एक छोटा सा ट्रांसिस्टर रेडियो रखा करते और देश विदेश की खबरों को सुना करते थे। उनके खास मित्रों में स्व. हरिदास जी सनाढ्य, स्व. मोहन लाल जी पगारिया, व हर्षलाल जी पगारिया थे।

इसी तरह समाजसेवा व शिक्षण कार्य करते करते 20 जनवरी 1991 में आप ईश्वर को प्यारे हो गए। ऐसे निष्ठावान कर्मयोगी गुरूवर को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़जल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, राजसमंद

लक्ष्मी एक, रूप अनेक

विष्णुप्रिया, चंचला, रमा, इंदिरा, पद्मा, कमला, समुद्रजा, हरिप्रिया, पद्‌मासना, लक्ष्मी, श्री आदि कई नामों से लक्ष्मी संज्ञा रूपेण है। अनादिकाल से सुख-समृद्धि की मंगलकामना मानव जाति की रही है। लक्ष्मी को पाने की चाह कौन नहीं रखता। प्रबल पुरूषार्थ के साथ ही लक्ष्मी के स्थायीत्व के लिए जीवन में दान-पुण्य परमावश्यक है। अन्नदान, विद्या दान, धन दान के साथ ही युग अवबोध म े रक्तदान, नैत्रदान, अंगदान, देहदान आदि की महश्रा सर्वविदित है। बड़े-बुजुर्गों की सेवा, रोगियों की सुश्रुषा, गरीब, विकल-निर्बलजन की सहायता से देवी लक्ष्मी प्रसन्न रहती है।

लक्ष्मी के स्थाई निवास के लिए उषा काल में उठकर घर की साफ-सफाई उश्रम ढंग से करना, परिवार में सौहार्द्र और माधुर्य का बना रहना, विवाद- कलह का वातारण नहीं होना, साथ ही कर्त व्यकर्म का ईमानदारी से निर्वहन करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है। घर में धन-धान्य के भंडार अटूट भरने लगते हैं। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

''स्वावलंबन की झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोष''

गीता में लिखा है-

''स्वै:-स्वै कर्मण्येभिरत: संसिद्धि लभते नरा: ।''

अर्थात अपने-अपने कर्म में पूर्ण निष्ठा से लगा हुआ मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। लक्ष्मी के स्थाई निवास के लिए नौ कलाएं शास्त्रों में बताई गई है। विभूति (कर्तव्य निर्वहन), नम्रता, कांति, तुष्टि, कीर्ति, सन्नति, पुष्टि, उत्कृष्टि, ऋद्धि। जीवन जीने की कला ही लक्ष्मी प्राप्ति की कला कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। जो बीच राह में बैठ गए, वे बैठे ही रह जाते हैं। लगातार जो चलते रहते, वे निश्चय मंजिल पाते हैं। हाथ पर हाथ धरे रहने वाले लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते।

उद्यमेत ही सिद्यन्ति कार्याणि न मनोरथै: ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति म ुखे मृगा: ।।

अर्थात उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं न कि मनोरथों से। ठीक उसी प्रकार सोए हुए शेर के मुख में हिरण नहीं आते। सतत सुकर्म करते रहने से धन-धान्य के भंडार अक्षय रहते हैं। केवल नाम मात्र से ही व्यक्तित्व की पहचान नहीं होती। नाम के साथ काम यानि कर्म महत्वपूर्ण है।

लोक प्रचलित प्रसिद्ध काव्य पंक्तियाँ है-

अमरा तो मरता देख्या, धना माँगता भीख।
लिछमी बिणती छाणा, आपणे ठनठनपाल ही ठीक।।

नाम अमरसिंह या अमरचंद होने से कोई अमर नहीं हो जाता। धनराज या धनसिंह नाम मात्र से कोई धनी नहीं होता। किसी महिला का नाम लक्ष्मी हो और वह गोबर के उपले यानि छाणे थेपे तो लक्ष्मी नाम सार्थक नहीं जान पड़ता। किसी का नाम ठनठनपाल हो तो भी वह धनी व नामी हो सकता है।

'धन खेती, धन नौकरी, धन-धन हो व्यापार।' खेती में धन शारीरिक परिश्रम से, नौकरी मे मानसिक श्रम से धन प्राप्त होता है। व्यापार में तो धन वृद्धि निरंतर होती रहती है। वर्तमान के कलयुग और चतुर युग में पैसा ही भगवान है। सभी पूछेंगे- सभी पूछेंगे आप कैसे है, जब तक आपकी जेब में पैसे है। जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए धन-संपदा अति आवश्यक है।

राजस्थानी भाषा में उक्ति है- रूपचंद व्हे पल्ले तो मिनख उबा वेईन मिले।' संसार सबल की सहायता करता है। दुबले को दो आषाढ़ वाली बात है-

सबे सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीप ही देत बुझाय।।

धन दौलत ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी के सभी रूप मनुष्य की मनोकामनाओं को पूरा करने वाले है। लक्ष्मी के अग्रलिखित रूपों का वर्णन-उल्लेख भारतीय साहित्यमें मिलता है।

आदि लक्ष्मी- प्रथम जननी है। इसे आदि शक्ति, मूल लक्ष्मी भी कहा जाता है।

महालक्ष्मी- प्रकृति के सौम्य भाव तथा उदारभाव की प्रतिनिधि मानी गई है। भगवान विष्णु संसार के नियंता है। लक्ष्मी धन, बुद्धि, बल द्वारा योगदान देती है।

गज लक्ष्मी - हाथी को राजसी वैभव, शक्ति व श्री का प्रतीक माना गया है। लक्ष्मी के स्वरूप पर जलवर्षा करते दो हाथी का स्वरूप गजलक्ष्मी संज्ञा से जाना जाता है।

धनलक्ष्मी - संपदा-संपति की मनोकामना को पूरा करती है। धन लक्ष्मी ने भगवान विष्णु को कुबेर के कर्ज मुक्ति दिलाने के लिए धनलक्ष्मी का रूप धारण किया।

धान्यलक्ष्मी - घर में अनाज की कमी को दूर रखने वाली तथा कोठार, रसोईघर में धान्य से सदा भरा रखने वाली शक्ति रूपा धान्यलक्ष्मी है। भोजन को आदरपूर्वक ग्रहण करने वाले, अन्न का कण भी झूठा नहीं डालने वाले से धान्य लक्ष्मी प्रसन्नता का अनुभव करती है। यह देवी हर घर में अन्न रूप में बिराजमान रहती है।

राजलक्ष्मी - कर्म योग, ज्ञानयोग, भक्तियोग मनुष्य के हाथ में है, किन्तु राजयोग अहोभाग्य से मिलता है। राजलक्ष्मी भाग्यवान व्यक्ति को शक्ति, वैभव इत्यादि राजसी सुखों का स्वामी बनाती है।

गृहलक्ष्मी - घर-घर में गृहलक्ष्मी निवासरत है। प्रीत-प्यार की डोर से परिवार में आत्मीय बंधन का संचार कर गृहलक्ष्मी मकान को घर बनाती है। नववधू के गृहप्रवेश के समय कुमकुम से चरण चिह्न बनाकर प्रवेश कराया जाता है। जिस घर में गृहस्वामिनी की इज्जत न हो तो गृहलक्ष्मी उस घर को छोड़कर चली जाती है।

सौन्दर्य लक्ष्मी - सुंदरता का वरदान देने वाली सौंदर्य लक्ष्मी है।

भाग्य लक्ष्मी - मान्यता है कि शिशु के जन्म के सात दिवस पश्चात भाग्य लक्ष्मी स्वयं आकर शिशु के भाल पर उसका भाग्य लिखकर जाती है।

संतान लक्ष्मी - नारी को सर्जन का वरदान देने वाली मानी जाती है। इसकी पूजा से योग्य संतान की प्राप्ति होती है।

वीर लक्ष्मी - यह देवी साहसी लोगों की आराध्य है। यह युद्ध में विजय दिलाती है। इनकी आठ भुजाएं है, जिनमें देवी ने विभिन्न अस्त्र-शस्त्र धारण किए हुए हैं।

विजयलक्ष्मी - यह माता भक्तों को अभय प्रदान करती है। कोर्ट कचहरी में या किसी क्षेत्र में संकट में हो तो देवी के इस स्वरूप की पूजा करनी चाहिए। श्रीदेवी लक्ष्मी कर्मयोगी और पुण्यवान के घर चिर स्थाई रहती है। रूपया-पैसा, सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात, मणि-माणिक्य जमीन-जायदाद को ही धन कह दिया जाए तो अपूर्ण बात होगी। महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध उक्ति है - 'शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्' अर्थात हमारे कर्म-धर्म की साधना का माध्यम यह शरीर ही है। इसलिए पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया कहा गया। पंच दिवसीय महापर्व की शुरूआत धनत्रयोदशी यानि धनतेरस से होती है। आयुर्वेद के प्रणेता भगवान धन्वंतरि स्वस्थ-प्रसन्न रहने का मंत्र देते है। रूप चतुर्दशी में शारीरिक-मानसिक सौन्दर्य के विकास की चर्चा है। तन मन स्वस्थ और सुन्दर होने के बाद ही हम धन-दौलत का उपभोग सही ढंग से कर पाते है।

धन साध्य नहीं साधन है। पुरखों ने तो संतोष को परम धन माना।
गौ धन, गज धन, वाजि धन, और रतन धन खानि।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समानि।।

पुरूषार्थ पुण्य और संतोष की त्रिवेणी में अवगाहन कर ही व्यक्ति अंतमर्न को आलोकित कर 'अप्प दीपो भव' को चरितार्थ कर सकता है।

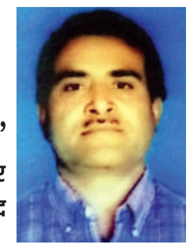

नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य'
शिक्षाधिकारी व साहित्यकार
नाथद्वारा, राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
आणछी देवी गुर्जर
प्रधान
हजारीलाल गुर्जर
पूर्व सरपंच-सियाणा

MGA
Wish You A Very Happy Diwali
MARBLE GANGSAW ASSOCIATION RAJSAMAND
Ravi Sharma-President Mob. 9414174601
Sanjay Samsukha-Gen. Secretary Mob. 9414174247
Rajnish Vagracha, Treasurer-Mob. 9414174267
Vice President
Goverdhan Laddha, Pasoond Road
Pushkar Shrimali, Nathdwara Road
Lalit Bohra, Amet Road
Regd. Off.-SPL-1, Road No. 2, RIICO Ind. Area, Dhoinda
Distt. Rajsamand (Raj.) Mob. 9549654601-4
E-mail mgarajsamand@gmail.com, website : www.mgarajsamand.com

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
कुकसिंह गौड़
जिला परिषद सदस्य

दीपावली के शुभ अवसर
पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
चन्द्रकला शर्मा
सरपंच
समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी
अपील
प्रेमसुख शर्मा
पूर्व पं.स. सदस्य
व मंडल अध्यक्ष
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। * अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत केलवाड़ा, पंचायत समिति, कुंभलगढ़

माया पुरोहित
सरपंच
रेखा कुंवर
उपसरपंच
मुकेश पुरोहित (बंटी)
समाज सेवी
दीपावली के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
* मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं * स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। * अधिक से अधिक पेड़ लगावें। * खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत सांयों का खेड़ा, पंचायत समिति, खमनोर, जिला-राजसमंद

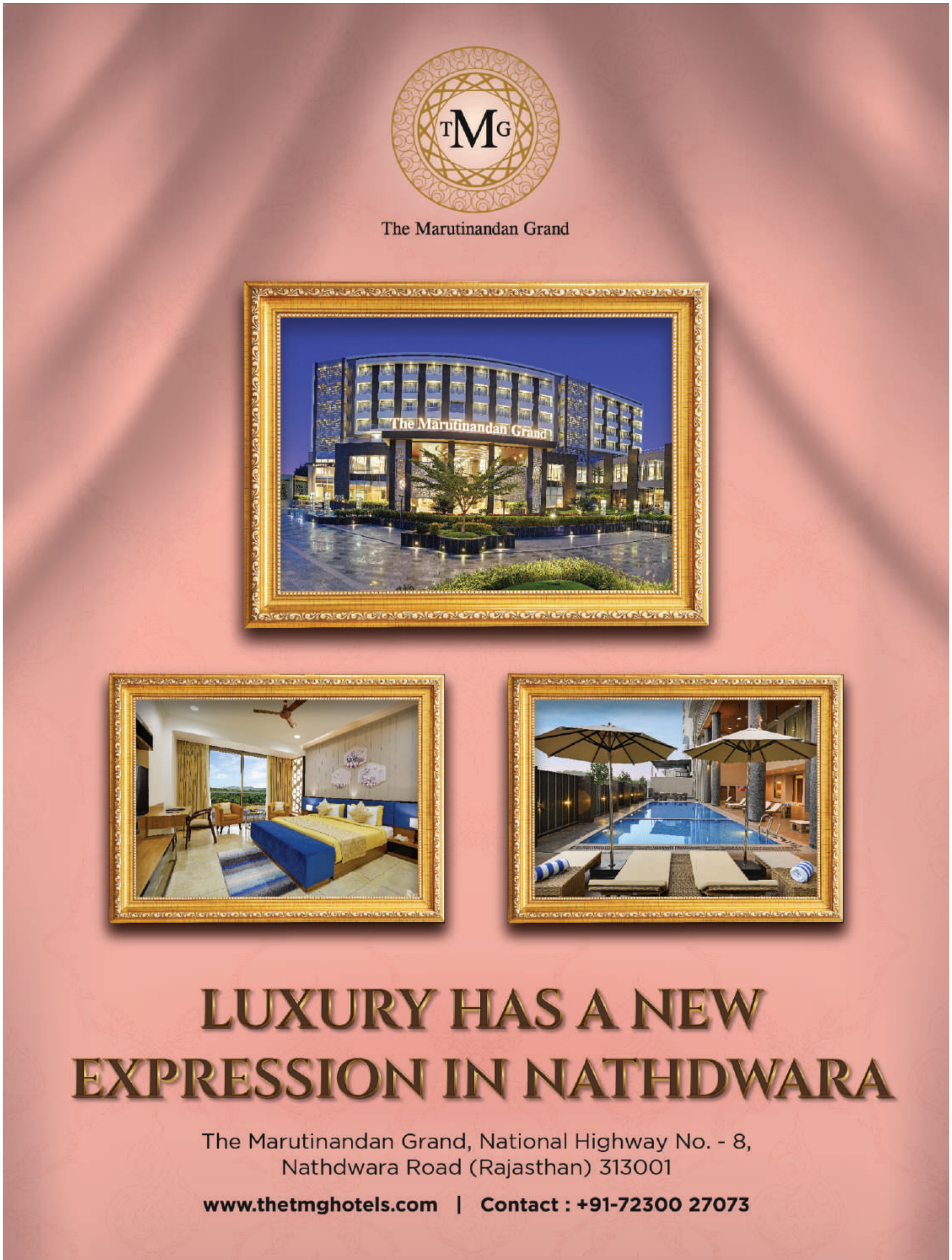
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

नारायणसिंह भाटी
पूर्व जिला प्रमुख

दीपावली के शुभ अवसर पर
को हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी

दीपमाला कुंवर
सरपंच

विक्रमसिंह भाटी
समाज सेवी

लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।

✻ मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं ✻ स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। ✻ अधिक से अधिक पेड़ लगावें। ✻ खुले में शौच नहीं करें।

अपील

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर

ग्राम पंचायत राज्यावास, पंचायत समिति, राजसमंद

श्रीमती सुन्दरदेवी
सरपंच

दीपोत्सव की समस्त क्षेत्रवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं

मनोहरकीर
पूर्व सरपंच

अपील **कोरोना वायरस के लक्षण :-** बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ
सावधानिया :- नियमित रूप से साबुन से हाथ धोएं, छींकते और खांसते समय नाक, मुंह ढकें और अलग कमरे में सोयें, जिस व्यक्ति को खांसी या बुखार के लक्षण हो उससे दूरी बनायें पंचायत को स्वच्छ बनाएं रखने में सहयोग करें, सिंगल युज प्लास्टिक का उपयोग न करें।

◆ जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं। ◆ श्रमिक कार्ड, भामाशाह एवं आधार कार्ड बनवाएं। ◆ बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाऐं।◆ कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं ◆ ग्राम सभा में भाग लेंवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें। ◆ कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें, गांव को साफ रखे। ◆पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना। ◆ जल की बचत अधिक उपज

ग्राम पंचायत पीपली आचार्यान, पंचायत समिति राजसमंद

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
मांगीलाल कुमावत
पूर्व सरपंच
निर्मल ग्राम पंचायत एमड़ी, पंचायत समिति-राजसमंद

दीपावली के शुभ अवसर
पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
किशनलाल सालवी
सरपंच
समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी
जगदीशचन्द्र मालीवाल
उपसरपंच
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
❋ मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं ❋ स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। ❋ अधिक से अधिक पेड़ लगावें। ❋ खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत बामनिया कला, पंचायत समिति, रेलमगरा

दीपावली के शुभ अवसर
पर समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
गोमी बाई गुर्जर
सरपंच
समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी
गुलाबी देवी जाट
उपसरपंच
अपील
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
❋ मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं ❋ स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। ❋ अधिक से अधिक पेड़ लगावें। ❋ खुले में शौच नहीं करें।
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत पनोतिया, पंचायत समिति,आमेट

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
सुरेश कुमावत
उपप्रधान
पंचायत समिति राजसमंद

दीपावली के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी
गंगादेवी अहीर
सरपंच
लेहरूलाल अहीर
जिला परिषद सदस्य
लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।
❋ मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं ❋ स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखें, अपने आस-पास गंदगी नहीं होने दें। ❋ अधिक से अधिक पेड़ लगावें। ❋ खुले में शौच नहीं करें।
अपील
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर
ग्राम पंचायत पीपली अहिरान, पंचायत समिति रेलमगरा

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

Follow us on: /B.R.

B.R. Vaishhnav
LIC Associate
9414171929 8003254484
brvaishhnav@gmail.com

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

विनोद सामर
चेयरमैन -दुग्ध सहकारी समिति

रेखा सामर
सरपंच

दीपावली के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी

लंपी संक्रमण से मृत पशुओं का सही निष्पादन करें
तथा बीमार व स्वस्थ पशुओं को अलग-अलग रखें।

अपील स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर

ग्राम पंचायत पनोतिया, पंचायत समिति रेलमगरा

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
आदित्य प्रतापसिंह चौहान
प्रधान
पंचायत समिति रेलमगरा
समस्त सरपंच एवं समस्त पंचायत समिति सदस्य, रेलमगरा

दीपोत्सव
जिलेवासियों को
हार्दिक
शुभकामनाएं
HAPPY
Diwali
MRS Group
बजरी रॉयल्टी संवेदक, राजसमंद

व्यक्ति का नहीं, सभ्यता का उत्सव है दीपावली

राज सिंहासन पर अपने प्रिय राजकुमार की खड़ाऊं रख कर एकटक उनकी राह निहारती प्रजा की चौदह वर्ष की तपस्या जब पूर्ण हुई, तब अयोध्या को राम मिले। राम यूं ही तो नहीं मिलते न! मेरे राम आए हैं, के वात्सल्य भाव से विह्वल हुई प्रजा ने अपने संसार को दीपों से सजा दिया और कहा अयोध्या तुम्हारी है राम!

उधर राम ने भी अयोध्या को पाने के लिए चौदह वर्षों की परीक्षा दी थी। क्या क्या न किया! कभी अपहृत पत्नी के वियोग में तड़पते हुए पशु पक्षियों तक से सिया का पता पूछा, तो कभी प्रिय अनुज का घायल शरीर गोद में लेकर रोते रहे। पर वे राम थे, हर परीक्षा में सफल हुए और विजयी होकर लौटे।

राम वन में बार बार कहते हैं– जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी! लक्ष्मण! यह स्वर्णमयी लंका नहीं रुचती मुझे, मुझे तो बस अपनी अयोध्या चाहिए। चौदह वर्ष की तपस्या के बाद जब राम को उनकी जन्मभूमि मिली, तो उन्होंने भी अपने हाथों अपने घर को दीपों से सजा दिया और कहा– मैं सदैव आपका हूं।

जितनी विह्वल अयोध्या थी, उतने ही विह्वल राम थे। तभी वह दीपोत्सव अमर हो गया और सभ्यता को दीपावली मिली। कुछ कथाएं बताती हैं, जब माता ने महिषासुर का वध किया, तब भी आमजन ने दीवाली मनाई। जब भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया और उसकी प्रजा के साथ साथ सोलह हजार बन्दी कन्याओं को मुक्ति दिलाई, तब भी प्रजा ने दीवाली बनाई। यह अन्याय के अंत का उल्लास था, पीड़ा से मुक्ति की खुशी थी। दीपावली अत्याचार से मुक्त होकर सदाचार की ओर अग्रसर होने का उल्लास है। दीपावली व्यक्ति का नहीं, सभ्यता का उत्सव है। परम्परा हमें केवल अपने घरों में ही दीपक जलाने को नहीं कहती, बल्कि हम एक दीपक मन्दिर में भी जला आते हैं। कुएं के जगत पर हर घर का दीपक पहुँचता है तो वह भी जगमगाता है। जब जगमगाता है ग्राम देवता का स्थान जगमगाते हैं, खलिहानए जगमगाता है, नदी का घाट तो वस्तुत: हमारी सभ्यता जगमगाती है। तभी कहा– यह व्यक्ति का नहीं सभ्यता का उत्सव है।

सभ्यता जब प्रौढ़ होती है, तभी समझ पाती है कि जो अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाए, वही मार्ग श्रेष्ठ है। सबकुछ पा लेने की हवस समाज को बर्बर बना देती है, पर समाज को कुछ देने का कर्तव्यबोध दीपावली का सृजन करता है। भारतीय परम्परा का हर पर्व सदैव यही कर्तव्यबोध याद दिलाता रहा है।

चलते रहो! अंधकार से प्रकाश की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, सबकुछ तहस–नहस कर देने वाली विनाशकारी मानसिकता से सृजन का ज्ञान देने वाली ऋषि परम्परा की ओर चरैवेति चरैवेति...।

दीपावली का प्रकाश सबके जीवन में उल्लास का सृजन करें, इसी कामना के साथ।

सर्वेश तिवारी श्रीमुख
गोपालगंज, बिहार

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
गणेश पालीवाल
अध्यक्ष : भाजपा राणा राजसिंह मंडल
8619842637
विधानसभा क्षेत्र राजसमंद

दीपोत्सव जिलेवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
योगेन्द्र कल्याणसिंह
चौहान
विधानसभा क्षेत्र–नाथद्वारा
team Yogendra kalyan Singh Chauhan
Yogendra kalyan Singh Chauhan
Yogendra Singh Chauha

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

कुंभलगढ़ में गरीबों के मसीहा बने

श्री नीरज सिंह राणावत

राजस्थान की राजधानी जयपुर में मध्यम साधारण परिवार में जन्मे श्री नीरज सिंह राणावत की पहचान सेवाभावी के तौर पर प्रदेशभर में है, लेकिन कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में समाज सेवा और विभिन्न क्षेत्रों में कराए गए उल्लेखनी कार्यों से उन्हें विशेष पहचान मिली। श्री नीरज सिंह राणावत के पिताजी सरकारी सेवा में कार्यरत रहे, जबकि उनकी माताजी गृहिणी थी। आपकी प्रारंभिक शिक्षा आदर्श विद्या मंदिर में हुई। माताजी-पिताजी और आदर्श विद्या मंदिर से मिले संस्कारों के बूते पर आपने विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए आज जो मुकाम हासिल किया है वो हरेक इंसान को नसीब नहीं होता। राजस्थान युनिवर्सिटी से स्नातक की पढ़ाई की।

बचपन से ही कुछ कर गुजरने का जज्बा था। समाज सेवा का जुनून था। आपने पढ़ाई के साथ-साथ प्राइवेट नौकरी भी की ताकि किसी पर बोझ नहीं बने। यही सोचकर वर्ष 2001 में स्वयं का कपड़ों का व्यापार शुरू कर दिया। लेकिन शिक्षा अध्ययन के साथ व्यापार करना आसान नहीं था, फिर इस चुनौतीपूर्ण कार्य को स्वीकार करते हुए आसमान छूने का सपना संजोया। यह कोई सरल कार्य नहीं था लेकिन हौंसला रखा। श्री नीरज सिंह जी राणावत सच्ची लगन और मेहनत से व्यापार में मुनाफा होने लगा तो उन्होंने निश्चय किया कि वह अपनी कमाई की 20 प्रतिशत राशि गरीबों और जरूरतमंदों पर खर्च करेंगे।

दीपावली समेत अन्य विशेष त्यौहारों पर जयपुर की विभिन्न बस्तियों में कपड़े और मिठाई वितरण शुरू किया। ये नेक कार्य करने के दौरान मन में भाव पैदा हुए कि समाज के पिछडे लोगों को अग्रिम पंक्ति में लाने के लिए कुछ अलग करना है। श्री नीरज ने कच्ची बस्तियों के बच्चों की पढ़ाई की सोची। आमतौर पर जिस उम्र में लड़के पार्टी, क्लब, मौज-मस्ती की सोचते है, उस उम्र में श्री नीरज सिंह राणावत ने निर्धन बच्चों को पढ़ाकर उनको पैरों पर खड़ा करने का संकल्प लिया। इतना ही नहीं श्री नीरज सिंह राणावत ने 600-700 निःशुल्क चिकित्सा शिविर वर्ष 2012 से 2018 तक प्रदेश में जगह-जगह लगाए।

समाज सरोकार का बीड़ा उठाने वाले युथ सोशल केयर संस्थान के नीरज सिंह राणावत ने कुंभलगढ़ क्षेत्र में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालो की स्थिति देखी और उनके मदद की ठान ली। कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र के आमेट केलवाड़ा में गरीब असहाय लोगों की मदद कर उनके जीवन यापन में सुधारना हुआ। विधानसभा में पेयजल, शिक्षा, खेल क्षेत्र मे पिछड़ापन दिखने पर इन मुद्दों पर विशेष ध्यान देना शुरू किया। जहां खेल जगत में कुंभलगढ़ प्रिमीयर लीग करा अच्छे प्रदर्शन चयन पर 20 युवा खिलाड़ीयो को प्रशिक्षण के लिए जयपुर भेजा। पेयजल के लिए विधानसभा क्षैत्र मे 140 टुयुवबेल खुदवाने के लक्ष्य है। ओलादर में संत अवधेश चेतन्य महाराज के करकमलों द्वारा टुयूबवेल जुन माह के अंत तक सभी ट्यूबवेल खुदवाई जाएगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनाथ, कमजोर वर्ग के बच्चो को शिक्षा से जोड़ने की महत्वपुर्ण कड़ी को आगे बढ़ा कुछ बच्चों को संस्थान द्वारा निजी स्कूलों में भर्ती करवाकर योगदान दिया। वही ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओ के लिए सिलाई, शिक्षा की अलख जगाने का काम किया जा रहा है। चिकित्सा को लेकर विधानसभा क्षेत्र में चार एम्बुलेंस चलाई जाएगी जिससे रोगियों को निशुल्क लाने व ले जाने में राहत मिलेगी व तत्काल चिकित्सा सुविधा मिल सकेगी। यह केलवाड़ा, चारभुजा, गोमती, आमेट क्षेत्र में चलेगी। युथ सोशल केयर संस्थान द्वारा कुंभलगढ़ विधानसभा में हर समय हर वर्ग के मसीहा बन काम कर रहा हैं। संस्थान टीम दिन रात क्षेत्र में काम कर रही हैं।

मूलभूत सुविधाओं के लिए योजनाएं तैयार की

● कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र के आमेट व केलवाड़ा तहसील में अनाथ बच्चों को स्कूली शिक्षा व गरीब परिवार को राशन व्यवस्था। ● कुंभलगढ़ विधानसभा में 57 पंचायतों में युवावर्ग जो खेलकूद में आगे बढ़ना चाहते थे उनके लिए केपीएल (कुंभलगढ़ प्रीमियम लीग) का आयोजन कराया। ● पानी की समस्या के मद्देनजर प्रत्येक पंचायत में नलकूप लगवाना। जहां बिजली नहीं है वहां पर सोलर ऊर्जा आदि योजनाएं ● भील समाज के लिए उनकी कन्याओं को कन्यादान स्वरूप 5100/- रुपए का दान किया जा रहा है। जिससे गरीब परिवार को उनके शादी में होने वाले खर्च में योगदान मिल सके। खरवड़ समाज की निर्धन विधवाओं के लिए पेंशन योजना की शुरूआत की जा रही है। ● भील समाज का एक व्यक्ति जिसका पैर हादसे में कट गया है, उसके उपचार के लिए कृत्रिम पैर लगवाया जाएगा। ● कुंभलगढ़, चारभुजा, गोमती व आमेट अति सुविधाजनक एम्बुलेंस दी जाएगी।

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन